सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 12 ● अंक 270 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, मंगलवार 10 नवम्बर, 2026
मूल्य ₹ 3/-



सबसे महान जीत प्रेम की होती है, ये हमेशा के लिए दिल जीत लेती है।
-सम्राट अशोक

सूर्यकुमार को मिली मुंबई की... 7 | सीनियर पवार की तबियत के बहाने... 3 | सरकार आने पर अयोध्या को सनातन... 2

फ्लाप हो गयी हजारों करोड़ की रामायण ?

नफरती चिंटूओ का प्रोपेगंडा नहीं आया काम

» रामायण की आलोचना से कांप उठे निर्माता!

» पीआर से पांच सितारे मिल सकते हैं, दर्शक नहीं : संजय शर्मा

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। रामायण फिल्म बना के राम के नाम पर हजारों करोड़ का कारोबार करने निकले थे लेकिन एक आलोचना ही इतनी भारी पड़ गई कि कानूनी नोटिस की नौबत आ गयी। फिल्म बनाई रामायण, प्रचार में आसमान सिर पर उठा लिया ट्रेलर के साथ ऐसा माहौल बनाया मानो भारतीय सिनेमा का इतिहास बदलने वाला है। फिल्म के समर्थन में सोशल मीडिया पर जयकारे लगवाए गए आलोचकों को निशाने पर लिया गया सवाल पूछने वालों को नफरत फैलाने वाला बताया गया।

लेकिन जब दर्शक सिनेमाघर पहुंचा तो उसने अपनी जेब से फैसला सुनाना शुरू कर दिया। अब सवाल फिल्म की भव्यता का नहीं उसके कारोबार का है। सवाल यह है कि क्या हजारों करोड़ का निवेश केवल प्रचार, पीआर और धार्मिक भावनाओं के सहारे वसूल हो पाएगा? फिल्म के निर्माताओं ने आलोचक कमाल आर. खान यानी केआरके को मानहानि का कानूनी नोटिस भेज दिया। आरोप है कि उन्होंने फिल्म और उससे जुड़ी कंपनी के खिलाफ झूठे और दुर्भावनापूर्ण आरोप लगाए जिससे उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचा। केआरके ने नोटिस सार्वजनिक किया और पलटवार करते हुए कहा कि दो हजार करोड़ की फिल्म बनाने वाला निर्माता एक आलोचक की बात तक बर्दाश्त नहीं कर पाया। अब सवाल यह है कि क्या फिल्म की आलोचना करना भी अपराध की श्रेणी में आने लगा है? क्या निर्माता को केवल तारीफ सुनने का अधिकार है और दर्शक तथा समीक्षक को सवाल पूछने का अधिकार नहीं।

केआरके को मानहानि का नोटिस



आइये अब जरा गणित को समझते हैं

पिक्चर के दोनों हिस्सों का अनुमानित बजट करीब चार हजार करोड़ रुपये है। पहले हिस्से की लागत लगभग दो हजार करोड़ बताई जा रही है। रिलीज के शुरुआती पांच दिनों के बाद फिल्म का वैश्विक कारोबार करीब 664 करोड़ रुपये के आसपास पहुंचा। इसमें विदेशों से लगभग 250 करोड़ रुपये और भारत से करीब 414 करोड़ रुपये का सकल कारोबार शामिल है। लेकिन सिनेमाघरों का हिस्सा कर और वितरण लागत निकालने के बाद निर्माता तक पहुंचने वाली रकम इससे काफी कम होती है। ऊपर से अग्रिम टिकट बुकिंग में शुरुआती उछाल के बाद अगले दिनों के लिए गिरावट के संकेत भी सामने आए हैं। इन आंकड़ों के बाद सवाल उठना शुरू हो गये है कि क्या हजारों करोड़ की रामायण एक बड़े पलाप की ओर अग्रसर है?

4 हजार करोड़ रुपये के करीब पिक्चर के दोनों हिस्सों का अनुमानित बजट है।

5 दिनों के बाद फिल्म का वैश्विक कारोबार करीब 664 करोड़ रुपये के आसपास पहुंचा।

250 करोड़ रुपये का लगभग कारोबार विदेशों से आया

414 करोड़ रुपये के आसपास फिल्म का कारोबार भारत में हुआ

प्रचार से स्टार मिल सकते हैं टिकट नहीं बिकते : संजय शर्मा



4PM के एडिटर-इन-चीफ संजय शर्मा ने भी फिल्म की समीक्षा करते हुए निर्माताओं के प्रचार अभियान, कलाकारों के अभिनय, संगीत, दृश्य प्रभाव और टिकटों की कीमत पर सवाल उठाते हुए अपनी समीक्षा में कहा है कि पीआर से पांच सितारे मिल सकते हैं टिकट नहीं बिकते। संजय शर्मा ने फिल्म के निर्माण और प्रचार अभियान पर सवाल उठाते हुए कहा कि हजारों करोड़ रुपये खर्च करने के बावजूद फिल्म में राम के किरदार का तेज, रावण का रौब, कहानी की जान और अभिनय की वह ताकत दिखाई नहीं देती जिसकी अपेक्षा इतने बड़े प्रोजेक्ट से की जा रही थी। संजय शर्मा की समीक्षा का सबसे तीखा हिस्सा फिल्म के प्रचार अभियान पर था। उन्होंने सवाल उठाया कि क्या निर्माताओं को लगा था कि कुछ टीवी एंकरों और प्रचारकों को साथ लेकर दर्शकों को प्रभावित कर लिया जाएगा? संजय शर्मा के मुताबिक किसी फिल्म के ट्रेलर पर लाखों प्रतिक्रियाएं आ सकती हैं। सोशल मीडिया पर उसके पक्ष में अभियान चल सकता है। बड़े-बड़े समीक्षक उसे पांच सितारे दे सकते हैं। टेलीविजन पर घंटों उसकी चर्चा हो सकती है। लेकिन अंत में सिनेमाघर में टिकट खरीदने का फैसला दर्शक करता है। उनका कहना है कि फिल्म के प्रचार में कुछ ऐसे चेहरों और आवाजों को आगे किया गया जिनकी छवि राजनीतिक और वैचारिक रूप से एक खास वर्ग से जुड़ी रही है। निर्माताओं को उम्मीद रही होगी कि इससे दर्शकों के बीच फिल्म की स्वीकार्यता बढ़ेगी। लेकिन यह भी समझना होगा कि दर्शकों की पसंद एक जैसी नहीं होती। राम के प्रति श्रद्धा रखने वाला व्यक्ति भी फिल्म की पटकथा अभिनय, संगीत और तकनीक की आलोचना कर सकता है।

सरकार आने पर अयोध्या को सनातन राजधानी बनाएंगे : अखिलेश यादव

» पूर्व सीएम ने कहा- जमीन सौदों की होगी जांच, राशन में मिलेगा तेल-घी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश का विधानसभा चुनाव जैसे-जैसे नजदीक आ रहा है, सूबे का सियासी गलियारा सरगर्म होने लगा है। ऐसे में समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव ने सोमवार को वादा किया कि अगर उनकी पार्टी सत्ता में आती है, तो वे अयोध्या को सनातन तीर्थाटन की वैश्विक राजधानी में बदल देंगे। उन्होंने राम मंदिर के पारदर्शी मैनेजमेंट, विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचे, स्थानीय अर्थव्यवस्था को फिर से जिंदा करने और मंदिर नगरी में जमीन के सौदों में कथित घोटालों की जांच कराने का भी वादा किया है।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर अपनी पोस्ट में, स्क प्रमुख ने कहा कि अयोध्या आने वाले श्रद्धालुओं और तीर्थयात्रियों की संख्या लगातार घट रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि राम मंदिर से जुड़ी चोरी के कारण पैदा हुई परेशानी ने स्थानीय अर्थव्यवस्था पर सीधा असर डाला है। उन्होंने लिखा, अयोध्या नगरी के मान-सम्मान की पुनर्स्थापना के लिए हम वचनबद्ध हैं. राम-मंदिर की चोरी से आहत होकर जिस प्रकार अयोध्या आने वाले आस्थावान और श्रद्धालु दिन-प्रतिदिन कम होते जा रहे हैं, जिसका सीधा असर यहां की स्थानीय अर्थव्यवस्था पर पड़ा है, हम उसे सुधारेंगे भी और संवारेंगे भी, अयोध्या के मंदिर को पारदर्शी व्यवस्था देकर विश्वास की भी पुनर्स्थापना करेंगे. वर्ल्ड-क्लास इन्फ्रास्ट्रक्चर देकर हम अयोध्या को सनातन तीर्थाटन की वैश्विक राजधानी बनाएंगे। उन्होंने आगे लिखा है कि हम एक ऐसी अयोध्या बनाएंगे, जहां कोई भी अहंकारी, तेल बटोरती किसी गरीब स्त्री या बच्चे-बच्ची को बेंत मारकर बेइज्जत और उत्पीड़ित नहीं करेगा। हम सरकार में आकर राशन में 'तेल-घी भी देकर शरीर की पौष्टिक आवश्यकताओं को पूरा करेंगे।



अयोध्या को बाहरी ठेकेदारों से मुक्त कराएंगे

उन्होंने लिखा है कि हम अयोध्या को बाहरी ठेकेदारों से मुक्त कराएंगे और जमीन की जांच बैठाएंगे. बाहरी लोगों ने ही अयोध्या को लूटा है. सर्किल रेट के महाघोटाले से जुड़े भाजपाई नेता व भ्रष्ट अधिकारी कोई भी बच नहीं पाएगा. अयोध्या की लूट से भरे उनके खजाने खंगाले जाएंगे उन्होंने बिना नाम लिए कथावाचक धीरेंद्र शास्त्री पर भी निशाना साधा और लिखा, हम ऐसी व्यवस्था भी बनाएंगे कि कोई भी दुष्मुखी व्यक्ति 'भगवान राम या भगवान कृष्ण ही नहीं बल्कि किसी भी धर्म के आराध्यों और महापुरुषों का अपमान न कर सके या अपमान करके स्वतंत्र न घूम सके. ऐसे धर्म-विरुद्ध लोगों को वैधानिक रूप से निरुद्ध किया जाएगा. दुर्वचन कहनेवाले ऐसे अधर्मी लोगों को प्रश्रय देनेवाले भी पाप के भागीदार होते हैं, उनको भी सामाजिक सौहार्द बिगाड़ने के षड्यंत्र में संलिप्त होने के कारण यथोचित दंड दिया जाएगा।

अयोध्या में परंपरागत नौकायन को बढ़ावा दिया जाएगा

अखिलेश यादव ने वादा किया है कि अगर उनकी सरकार आती है तो अयोध्या में परंपरागत नौकायन को बढ़ावा दिया जाएगा, जिससे परंपरागत नाविकों को उसका लाभ मिले और भगवान राम और निषादराज का प्रगाढ़ संबंध फिर से स्थापित हो सके. भाजपा इस संबंध को तोड़ना चाह रही है क्योंकि भाजपाई प्रभुत्ववाद कभी नहीं चाहता है कि प्रभु राम और पीडीए समाज का गले मिलने का कोई भी दृश्य किसी को याद रहे।

अगले साल चुनाव में राम मंदिर बनेगा मुद्दा

ये वादे ऐसे समय में किए गए हैं जब 2027 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों से पहले राम मंदिर से जुड़े जमीन के सौदों में हुई कथित घोटालों को लेकर राजनीतिक बहस तेज हो गई है. राज्य में अगले साल विधानसभा चुनाव होने हैं, जिनमें समाजवादी पार्टी 2017 और 2022 की लगातार दो हार के बाद वापसी करने की उम्मीद कर रही है।

इंडिया गठबंधन में कोई मतभेद नहीं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क



अमरोहा। समाजवादी पार्टी (सपा) के सांसद ज़िया उर रहमान बर्क ने भरोसा जताया है कि अखिलेश यादव और राहुल गांधी 2027 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों के लिए सीट-बंटवारे के मुद्दे को सुलझा लेंगे। उत्तर प्रदेश के संभल में बोलते हुए, बर्क ने इंडिया गठबंधन के भीतर किसी भी तरह के मतभेद की खबरों को ज्यादा अहमियत नहीं दी। उन्होंने कहा कि चुनावी गठबंधनों में सीटों के लिए कड़ा मोलभाव होना एक सामान्य बात है।

बर्क ने इस स्थिति की तुलना सत्ताधारी राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन से करते हुए कहा कि इसमें कोई समस्या नहीं है। मान लीजिए कि एनडीए की पार्टियां चुनाव लड़ती हैं, तो उनके सहयोगी भी ज्यादा से ज्यादा सीटें मांगने की कोशिश करेंगे। अगर समाजवादी पार्टी, कांग्रेस और इंडिया गठबंधन मिलकर चुनाव लड़ते हैं - जो कि वे लड़ेंगे ही - तो उस समय अखिलेश यादव भी ज्यादा सीटों की मांग करेंगे। उन्होंने अखिलेश यादव और राहुल गांधी दोनों के नेतृत्व पर भरोसा जताते हुए कहा कि कोई गतिरोध नहीं है और बातचीत के जरिए आपसी सहमति बन जाएगी। बर्क ने कहा कि हमें पूरा भरोसा है कि अखिलेश यादव और राहुल गांधी बैठकर इस मुद्दे को सुलझा लेंगे। कौन सी पार्टी किन सीटों पर चुनाव लड़ेगी, इसकी घोषणा जल्द ही कर दी जाएगी।

पूर्व सीबीआई चीफ एम. नागेश्वर राव की पार्टी यूपी चुनाव में उतरेगी

» सर्वजन सनातन पार्टी ने उम्मीदवारों से मांगे आवेदन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सीबीआई के पूर्व चीफ एम. नागेश्वर राव की सर्वजन सनातन पार्टी ने उत्तर प्रदेश के 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव में उतरने का ऐलान कर दिया है. नागेश्वर राव ने चुनाव के लिए संभावित उम्मीदवारों से आवेदन मांगे हैं, इससे यूपी की राजनीति में कई नए समीकरण बनते दिखेंगे। सर्वजन सनातन पार्टी का यूपी चुनाव लड़ना अखिलेश यादव के लिए ये एक नई चुनौती से कम नहीं होगा।



हैदराबाद में रहने वाले सेवानिवृत्त आईपीएस अधिकारी राव करीब एक महीने पहले काशी में गंगा के तट पर बतौर राष्ट्रीय अध्यक्ष पार्टी में शामिल हुए थे उन्होंने कहा कि पार्टी उत्तर प्रदेश की सभी 403 विधानसभा सीट के लिए संभावित उम्मीदवारों के चयन की प्रक्रिया के पहले चरण की शुरुआत कर रही है। राज्य में अगले साल की शुरुआत में विधानसभा चुनाव होने हैं। नागेश्वर राव ने 'एक्स पर लिखा, यह आवेदन केवल पहले चरण में प्रारंभिक छंटनी के लिए है. प्रारंभिक तौर पर उपयुक्त पाए जाने वाले आवेदकों से दूसरे चरण में विस्तृत जानकारी और जरूरी दस्तावेज मांगे जाएंगे।

सर्वजन सनातन पार्टी की आवेदन आमंत्रित करने संबंधी सूचना में बताया गया कि उम्मीदवारों को सर्वजन सनातन पार्टी की विचारधारा, मूल उद्देश्यों और नीतियों में विश्वास होना चाहिए तथा उनके अनुरूप काम करने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए। पार्टी में शामिल होने के लिए निर्धारित मानदंडों के अनुसार, आवेदक भारतीय नागरिक होने चाहिए, उनका नाम उत्तर प्रदेश के किसी भी विधानसभा क्षेत्र की मतदाता सूची में दर्ज होना चाहिए और नामांकन पत्रों की जांच की तारीख तक उनकी उम्र कम से कम 25 वर्ष होनी चाहिए।

परिसीमन एसआईआर जितना खतरनाक : गहलोत

पूर्व सीएम का भाजपा अध्यक्ष पर तंज बोले- पार्टी और जनता गंभीरता से नहीं लेती

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर । पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष की राहुल गांधी पर की गई टिप्पणियों को लेकर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि भाजपा अध्यक्ष को न तो उनकी अपनी पार्टी गंभीरता से लेती है और न ही जनता। गहलोत के मुताबिक, पहले भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्षों की बातों को गंभीरता से सुना जाता था, लेकिन मौजूदा अध्यक्ष के बयानों का कोई खास असर दिखाई नहीं देता।

उन्होंने कहा कि ऐसे व्यक्ति की टिप्पणियों पर प्रतिक्रि या देने की भी जरूरत नहीं है। गहलोत ने कहा कि देश में लोकतंत्र की स्थिति चिंताजनक है। करीब 80 साल के इतिहास में पहली बार ऐसा देखने को मिल रहा है, जब सत्तारूढ़ दल खुद विपक्ष के आंदोलनों के जवाब में प्रदर्शन और रैलियां कर रहा है। पहले विपक्ष के आंदोलन से सरकारें फीडबैक लेकर अपनी कमियों में सुधार करती थीं, लेकिन अब सरकार विपक्ष के कार्यक्रमों के जवाब में खुद सड़कों पर उतर रही है। उन्होंने भाजपा की लोकतंत्र बचाओ रैली पर भी सवाल उठाए।



गहलोत ने कहा कि विपक्ष पिछले कई महीनों से अलग-अलग मुद्दों पर शांतिपूर्ण और अनुशासित तरीके से प्रदर्शन कर रहा है। चाहे जेनजी आंदोलन हो, कांग्रेस के प्रदर्शन हों या इंडिया गठबंधन के कार्यक्रम, इनमें अनुशासन और भाईचारा देखने को मिला है। इसके बावजूद विपक्ष पर अराजकता फैलाने के आरोप लगाए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दिमागी नक्सली वाले बयान पर गहलोत ने कहा कि देश में तनाव कौन पैदा कर रहा है, यह जनता देख रही है। उन्होंने परिसीमन के मुद्दे को SIR जितना गंभीर और खतरनाक बताते हुए आरोप लगाया कि इसके जरिए देश की राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित करने की कोशिश हो रही है। गहलोत ने कहा कि महिलाओं को आरक्षण देने के नाम पर परिसीमन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जा रहा है, जबकि महिला आरक्षण कानून पहले ही पारित हो चुका है। उन्होंने असम और राजस्थान में हुए परिसीमन का उदाहरण देते हुए आरोप लगाया कि वार्डों की सीमाओं में बदलाव से कांग्रेस को नुकसान पहुंचा है। जयपुर और जोधपुर में भी वार्डों के पुनर्गठन को लेकर उन्होंने सवाल उठाए।

उन्होंने आशंका जताई कि यदि परिसीमन के जरिए सत्ता पक्ष को मनमाफिक राजनीतिक लाभ मिलता है और भाजपा 2029 में फिर सत्ता में आती है तो देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था कमजोर हो सकती है। गहलोत ने पश्चिम बंगाल का उदाहरण देते हुए आरोप लगाया कि वहां टीएमसी के विधायकों को तोड़कर विपक्ष की भूमिका भी भाजपा के प्रभाव में लाई गई है। उन्होंने कहा कि यदि पक्ष और विपक्ष दोनों पर एक ही दल का प्रभाव हो गया तो लोकतंत्र और संविधान की स्थिति क्या होगी?

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी



हादसों ने खोल दी मप्र में अग्निशमन व्यवस्था की पोल : पटवारी

» एमपी: सिवनी-कटनी अग्निकांड के कांग्रेस अध्यक्ष का मोहन सरकार पर हमला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भोपाल। मध्य प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने सोमवार को प्रदेश में अग्निशमन व्यवस्था और आपातकालीन सेवाओं की तैयारियों को लेकर राज्य सरकार पर तीखा हमला बोला। प्रदेश में दीपावली के दौरान आग लगने की घटनाओं में कई लोगों की मौत के बाद पटवारी ने आरोप लगाया कि राज्य का सरकारी तंत्र बार-बार होने वाली आग की घटनाओं से निपटने में पूरी तरह सक्षम नहीं है।



भोपाल में पत्रकारों से बातचीत करते हुए पटवारी ने आगजनी की घटनाओं में मारे गए लोगों के प्रति शोक व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि कटनी सहित प्रदेश के अलग-अलग जिलों में 13 से अधिक लोगों की मौत हुई है। मैं सभी मृतकों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। दीपावली के आसपास ऐसी घटनाओं का बढ़ना संभव है, लेकिन ये हादसे सरकार की तैयारियों की वास्तविक स्थिति भी उजागर करते हैं। अग्निशमन व्यवस्था में बुनियादी संसाधनों की कमी पर सवाल उठाते हुए पटवारी ने कहा कि आग लगने जैसी घटनाओं के समय उनसे निपटने के लिए कई जगह जरूरी संसाधन उपलब्ध नहीं होते। कहीं दमकल वाहन नहीं हैं तो कहीं दमकल के पाइप जैसे उपकरण खराब पड़े हैं। उन्होंने कहा कि जब इंदौर और भोपाल जैसे बड़े शहरों में भी ऐसी कमियां मौजूद हैं, तो ग्रामीण, आदिवासी और अन्य जिलों की स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता पटवारी की यह टिप्पणी मध्य प्रदेश के सिवनी और कटनी जिलों में आग लगने की दो अलग-अलग घटनाओं में दो परिवारों के 12 लोगों की मौत के बाद आई है। दीपावली के बाद प्रदेश के कई इलाकों में उत्सव का माहौल मातम में बदल गया। सिवनी में सोमवार तड़के एक आभूषण कारोबारी के घर में आग लगने से छह लोगों की मौत हो गई। सिवनी के पुलिस अधीक्षक (एसपी) कृष्ण लालचंदानी के मुताबिक, हादसे के समय घर में करीब 10 लोग मौजूद थे। आग और धुएं के कारण दम घुटने तथा झुलसने से छह लोगों की जान चली गई, जबकि पुलिस और स्थानीय लोगों ने चार अन्य को सुरक्षित बाहर निकाल लिया। मृतकों की पहचान कुंदन लाल सोनी, उनकी पत्नी राजकुमारी सोनी, इंदौर से आई उनकी बेटी, एक पोते और दो बहुओं के रूप में हुई है।

सीनियर पवार की तबियत के बहाने सियासी हलचल बढ़ी

प्रफुल्ल पटेल की मुलाकात के बाद चर्चा तेज

महाराष्ट्र में बीमार पवार का मोदी ने जाना हाल

» एनसीपी के दोनों गुटों को लेकर सरगर्मी बढ़ी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। महाराष्ट्र की सियासत में फिर हलचल मची है। बीमार शरद पवार का पहले पीएम नरेंद्र मोदी ने हालचाल लिया उसके बाद हॉस्पिटल में प्रफुल्ल पटेल मिलने पहुंचे। इसके बाद से नई चर्चाएं सियासी गलियारों में तैरने लगीं हैं। पिछले बुधवार को प्रफुल्ल पटेल ने शरद पवार से अस्पताल में मुलाकात की है। दोनों की मुलाकात के बाद एनसीपी के दोनों गुटों के बीच एक बार फिर मर्चर की चर्चा तेज है।

महाराष्ट्र के सीनियर नेता शरद पवार तबियत खराब होने के बाद अस्पताल में भर्ती हैं, एक तरफ वह अस्पताल में स्वास्थ्य लाभ ले रहे हैं तो दूसरी तरफ महाराष्ट्र में सियासी हलचल भी तेज हैं। क्योंकि पिछले 48 घंटे में राजनीतिक घटनाक्रम तेजी से बदला है। सबसे पहले पीएम मोदी ने शरद पवार को फोन फर उनका हालचाल जाना था। फिर बुधवार को एनसीपी के कार्यकारी अध्यक्ष प्रफुल्ल पटेल मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल पहुंचे और शरद पवार से लंबे समय तक बंद कमरे में बातचीत की है। इस मुलाकात के बाद ही राजनीतिक पंडितों के बीच कई तरह के कयास लग रहे हैं।



पीएम मोदी की शरद पवार को कॉल

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता शरद पवार के साथ हुई कथित टेलीफोन बातचीत ने महाराष्ट्र में नई राजनीतिक अटकलों को जन्म दे दिया है। इसमें मुख्य रूप से एनसीपी के दोनों गुटों के भविष्य और राष्ट्रीय राजनीति में पवार की बेटी सुप्रिया



सुले की संभावित भूमिका पर चर्चा हो रही है। शरद पवार के करीबी सहयोगी विट्ठल मनियार के अनुसार, पुणे के रूबी हॉल क्लिनिक से छुट्टी मिलने के बाद, 85 वर्षीय नेता का हाल-चाल जानने के लिए मोदी ने बुधवार को उन्हें फोन किया था। पुणे में पत्रकारों से बात करते हुए मनियार ने बताया कि आज सुबह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने साहब (शरद पवार) का हाल जानने के लिए फोन किया। उन्होंने बहुत स्नेह और सम्मान के साथ बात की और कहा, साहब, कृपया पूरी तरह से आराम करें। सुप्रिया अब तैयार हैं। सुप्रिया और हम देश का ख्याल रखेंगे। आप आराम करें, यही मेरी विनती है।

अमित शाह से मिल चुके हैं प्रफुल्ल पटेल

दरअसल, 1 नवंबर को प्रफुल्ल पटेल एनसीपी के 5 अन्य नेताओं के साथ अमित शाह से मुलाकात की थी। खास बात यह है कि इस मुलाकात में डिप्टी सीएम सुनेत्रा पवार और उनके बेटे सांसद पार्थ पवार नहीं थे। सूत्रों के मुताबिक बताया गया था कि इस मुलाकात में महाराष्ट्र सरकार में वित्त मंत्रालय फिर से वापस एनसीपी अजित गुट को देने की मांग ही थी। लेकिन राजनीतिक गलियारों में यह भी चर्चा है कि इन नेताओं ने शाह से पार्थ पवार के एकतरफा कामकाज और संगठन के कमजोर होने की शिकायत की थी। इसके बाद 3 नवंबर को पटेल, भुजबल और दिलीप वलसे पाटिल ने उपमुख्यमंत्री और पार्टी प्रमुख सुनेत्रा पवार की अगुवाई



वाली कोर कमेटी को ब्रीफ किया और सुधार के लिए तुरंत कदम उठाने की मांग की थी। अब प्रफुल्ल पटेल शरद पवार से मिले हैं, इससे पहले पीएम मोदी ने भी फोन पर उनका हालचाल जाना था, जिसमें अहम बात हुई थी।

मुलाकात सिर्फ स्वास्थ्य पूछने के लिए थी : पटेल

पटेल ने यह भी कहा कि यह मुलाकात सिर्फ स्वास्थ्य पूछने के लिए थी, अस्पताल राजनीति की जगह नहीं है। लेकिन उन्होंने यह स्वीकार किया कि राजनीति पर भी सामान्य बातचीत हुई। उन्होंने डिटेल नहीं बताई, बस इतना कहा कि 10 नवंबर के बाद फिर मुलाकात होगी। उनसे पहले उसी दिन मंत्री छगन भुजबल और कांग्रेस विधायक विश्वजीत कदम भी पवार से मिलने पहुंचे थे। जिससे सियासी हलचल तेज है।



मोदी जैसे नेता काम कर रहे हैं, तब तक उन्हें देश को लेकर कोई चिंता नहीं : पवार

विट्ठल मनियार ने बताया कि शरद पवार ने गर्मजोशी से जवाब देते हुए कहा कि जब तक मोदी जैसे नेता काम कर रहे हैं, तब तक उन्हें देश को लेकर कोई चिंता नहीं है। हालांकि, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी या शरद पवार में से किसी ने भी सार्वजनिक रूप से इस बातचीत की पुष्टि नहीं की है। फिलहाल, इस तरह की किसी संभावना को लेकर कोई आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है।

प्रफुल्ल पटेल से शरद पवार ने की बातचीत

प्रफुल्ल पटेल ने इसे शरद पवार के साथ साधारण मुलाकात बताया है, उनका कहना है कि वह पवार का हालचाल लेने गए थे। लेकिन सूत्रों के मुताबिक बातचीत के दौरान शरद पवार ने प्रफुल्ल पटेल से केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के साथ उनकी हालिया मुलाकात के बारे में पूछा है। माना जा रहा है कि पवार ने पटेल से इस बारे में विस्तार से जानकारी मांगी कि क्या चर्चा हुई, किन राजनीतिक विषयों पर बात की गई और नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी के अजित पवार गुट के प्रमुख नेताओं की हालिया दिल्ली यात्रा का असल मकसद क्या था।

...तो शरद पवार होते भारत के राष्ट्रपति

अठावले ने यह भी कहा कि अगर एनसीपी (एसपी) प्रमुख शरद पवार (जो सुले के पिता हैं) 2019 में सत्तारूढ़ गठबंधन में शामिल हो गए होते, तो वह भारत के राष्ट्रपति बन सकते थे। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और शरद पवार के बीच अच्छे संबंधों की ओर भी इशारा किया। उन्होंने कहा कि अजीत पवार ने शरद पवार से एनडीए में शामिल होने की अपील की थी, लेकिन उन्होंने इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया। अजीत पवार के निधन के समय, एनसीपी के दोनों गुटों के बीच विलय की बात चल रही थी, लेकिन बाद में इस प्रक्रिया को रोक दिया गया।

महाराष्ट्र दौरे के बाद शरद पवार अस्पताल में भर्ती

खांसी और छाती में दर्द की शिकायत के बाद, 2 नवंबर को शरद पवार को पुणे के रूबी हॉल क्लिनिक में भर्ती कराया गया था। अस्पताल में भर्ती होने से कुछ समय पहले उन्होंने महाराष्ट्र के सूखा प्रभावित इलाकों का दौरा किया था। अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद शरद पवार को फॉलो-अप के लिए मुंबई के एक अस्पताल ले जाया गया।

रामदास अठावले के बयान ने दी अकटकलों को और हवा

वहीं दूसरी ओर केंद्रीय मंत्री रामदास अठावले ने दावा किया कि अगर नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) की सांसद सुप्रिया सुले सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजद) में शामिल हो जाती हैं, तो उन्हें केंद्रीय मंत्रिमंडल के अगले विस्तार में जगह मिल सकती है। बता दें कि अठावले की पार्टी, रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (आरपीई), राजद का ही एक हिस्सा है। अगर सुले राजद में शामिल होती हैं तो यह खुशी की बात होगी। हम गठबंधन में उनके शामिल होने का स्वागत करेंगे। मंत्रिमंडल के अगले विस्तार में उन्हें जगह देने पर विचार किया जा सकता है।



Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_SanjayS

जिद... सच की

आस्था स्थलों पर जिंदगी की कीमत क्यों नहीं

> सबसे बड़ा सवाल यही है कि आखिर हमारी आस्था के स्थलों पर इंसानी जिंदगी इतनी सस्ती क्यों हो जाती है? यदि पिछली दुर्घटनाओं से सबक लेकर प्रभावी सुरक्षा तंत्र विकसित किया गया होता तो बार-बार ऐसी मौतों का सामना नहीं करना पड़ता।

देश में कोई ऐसा महीना नहीं है जब श्रद्धालुओं के किसी न किसी हादसे में मौत होने की खबरें न आती हों। खास तौर धार्मिक आयोजनों में भगदड़ में मरने वालों की संख्या ज्यादा होती है। उसमें महिलाओं व बच्चों की मात्र अधिक होती है। हर बार त्रासदी के बाद शोक संदेश जारी होते हैं, मुआवजे की घोषणाएं होती हैं, जांच समितियां गठित की जाती हैं और इसके बाद व्यवस्था फिर पुराने ढर्रे पर लौट जाती है। यही हमारी सबसे बड़ी विफलता है। जिस उत्सव में जीवन, शक्ति और विजय का संदेश गूंजना चाहिए था, वहां मातम पसरा था। सबसे बड़ा सवाल यही है कि आखिर हमारी आस्था के स्थलों पर इंसानी जिंदगी इतनी सस्ती क्यों हो जाती है? यदि पिछली दुर्घटनाओं से सबक लेकर प्रभावी सुरक्षा तंत्र विकसित किया गया होता तो बार-बार ऐसी मौतों का सामना नहीं करना पड़ता। जांच का उद्देश्य केवल दोषियों की पहचान करना नहीं, उन खामियों को दूर करना भी होना चाहिए, जिनके कारण एक ही प्रकार की त्रासदियां बार-बार सामने आती हैं। सवाल यह नहीं कि अगला हादसा कहां होगा बल्कि यह है कि उसे रोकने के लिए हमने अब तक क्या किया है? यह समझना जरूरी है कि भगदड़ केवल लोगों के अचानक दौड़ने से नहीं होती।

धर्म, आस्था और विश्वास के केंद्रों पर इंसान सुकून, शांति और सुख-समृद्धि की कामना लेकर पहुंचता है लेकिन जब वही स्थान चीख-पुकार, दमघोंटू भीड़ और मौत के मंजर में तब्दील हो जाएं तो यह हमारी व्यवस्था की संवेदनहीनता और सुरक्षा संबंधी तैयारियों की विफलता का भयावह प्रमाण है। कोलकाता के चोरबागान दुर्गा पूजा पंडाल में 17 अक्टूबर की शाम भगदड़ जैसी स्थिति में 19 लोगों की मौत और दो दर्जन से अधिक लोगों के घायल होने की खबर ने एक बार फिर देश को झकझोर दिया। सप्तमी की शाम मां दुर्गा के दर्शन की लालसा लेकर निकले श्रद्धालुओं को क्या पता था कि घर लौटने के बजाय कई परिवारों को अपने प्रियजनों के शव मिलेंगे? चोरबागान की घटना को केवल अचानक उमड़ी भीड़ या दुर्भाग्यपूर्ण हादसा बताकर जिम्मेदारी से बचना आसान है लेकिन ऐसा करना त्रासदी के वास्तविक कारणों से आंखें मूंदना होगा। बारिश के बीच पंडाल में प्रवेश और निकास के रास्तों पर भी? का दबाव बढ़ा और अफरा-तफरी की स्थिति पैदा हुई। घटनास्थल की संकरी गलियों, लोगों की आवाजाही तथा सुरक्षा प्रबंधों को लेकर भी सवाल उठे हैं। हालांकि, दुर्घटना के वास्तविक कारणों और जिम्मेदारी का निर्धारण निष्पक्ष जांच से ही होना चाहिए। फिर भी, यदि भारी भी? और खराब मौसम के बावजूद आवाजाही को सुरक्षित रखने की पर्याप्त व्यवस्था नहीं थी तो यह गंभीर प्रशासनिक और आयोजन संबंधी विफलता का मामला है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

हादसों पर लगाम लगाएगी आधुनिक ब्रेकिंग तकनीक

अली खान

सड़क हादसों में लगातार बढ़ती मौतों और घातक दुर्घटनाओं पर लगाम लगाने के उद्देश्य से भारत सरकार ने एक बेहद महत्त्वपूर्ण और ऐतिहासिक कदम उठाया है। केंद्र सरकार के सड़क परिवहन मंत्रालय ने प्रस्ताव पारित किया है कि अक्टूबर 2030 से देश में बनने वाले सभी नए कार मॉडलों में 'एडवांस इमरजेंसी ब्रेकिंग सिस्टम' को अनिवार्य रूप से लागू किया जाएगा। अब तक केवल महंगी और लग्जरी कारों तक सीमित रहने वाली यह प्रीमियम सुरक्षा तकनीक अब आम बजट की चार पहिया गाड़ियों का भी हिस्सा बनेगी। नए नियमों के ड्राफ्ट नोटिफिकेशन के मुताबिक, 1 अक्टूबर, 2030 या उसके बाद आने वाले एम1 श्रेणी के सभी नए कार मॉडलों में एईबीएस का होना अनिवार्य होगा।

इसके अलावा, जो मौजूदा कार मॉडल इस समय-सीमा के बाद भी बनते रहेंगे, उन्हें यह तकनीक अपनाने के लिए अतिरिक्त समय दिया गया है और उनके लिए यह नियम अक्टूबर, 2032 से प्रभावी होगा। सरकार ने केवल कारों ही नहीं, बल्कि मध्यम और भारी व्यावसायिक वाहनों के लिए भी कड़े नियम तय किए हैं, जिसके तहत 1 अक्टूबर, 2027 से ट्रकों के लिए संशोधित ब्रेकिंग मानक और इलेक्ट्रॉनिक स्टेबिलिटी कंट्रोल सिस्टम को अनिवार्य कर दिया गया है। बता दें कि 'एडवांस इमरजेंसी ब्रेकिंग सिस्टम' एक अत्यधिक आधुनिक और एआई-संचालित एक्टिव सेफ्टी तकनीक है, जो सड़क पर आगे चल रहे वाहनों, पैदल यात्रियों या अचानक आई किसी बाधा को रियल-टाइम में ट्रैक करती है। यह सिस्टम गाड़ी के अगले हिस्से में लगे उच्च क्षमता वाले रडार, लिडार सेंसर और कैमरों का उपयोग करके लगातार सामने के ट्रैफिक और दूरी का विश्लेषण करता रहता है। जब कोई दूसरा वाहन या बाधा अचानक गाड़ी के सामने आ जाती है और चालक द्वारा समय पर कोई प्रतिक्रिया (जैसे ब्रेक लगाना या स्टेयरिंग मोड़ना) नहीं दी जाती, तो एईबीएस तुरंत एक्टिव हो जाता है। यह सिस्टम पहले चालक को डैशबोर्ड पर विजुअल लाइट और अलर्ट साउंड के जरिए चेतावनी देता है।

यदि चालक इसके बाद भी कोई त्वरित प्रतिक्रिया नहीं देता है, तो सिस्टम वाहन के ऑन-बोर्ड कंप्यूटर को संदेश भेजकर ऑटोमैटिकली इलेक्ट्रॉनिक ब्रेक चालू कर देता है। यह पूरी प्रक्रिया एक सेकंड के भी छोटे हिस्से में पूरी हो जाती है, जिससे तेज रफ्तार गाड़ी समय रहते रुक जाती है



> एईबीएस का सबसे बड़ा प्रभाव यह होगा कि यह मानव भूल के कारण होने वाले गंभीर हादसों और उनसे होने वाली मौतों की संख्या में भारी कमी लाएगा। इसके लागू होने से न केवल कारों में बैठे यात्रियों की जान सुरक्षित होगी, बल्कि पैदल चलने वालों और दोपहिया सवारों को भी सुरक्षा मिलेगी।

या उसकी गति इतनी कम हो जाती है कि टकराने का जोखिम न के बराबर रह जाता है। यदि हम सड़क सुरक्षा और भारतीय यातायात पर एईबीएस के दूरगामी प्रभाव की बात करें तो भारतीय सड़कों पर एईबीएस और ट्रकों में इलेक्ट्रॉनिक स्टेबिलिटी कंट्रोल लागू होने से देश के ऑटोमोटिव सेक्टर और सड़क सुरक्षा परिदृश्य पर सकारात्मक और क्रांतिकारी प्रभाव देखने को मिलेगा। सड़क हादसों के आंकड़ों पर नजर डालें तो एक बड़ी संख्या में दुर्घटनाएं ड्राइवर की झपकी लगने, ध्यान भटकने या तेज रफ्तार के कारण सही समय पर ब्रेक न लगा पाने की वजह से होती हैं। एईबीएस का सबसे बड़ा प्रभाव यह होगा कि यह मानव भूल के कारण होने वाले गंभीर हादसों और उनसे होने वाली मौतों की संख्या में भारी कमी लाएगा। इसके लागू होने से न केवल कारों में बैठे यात्रियों की जान सुरक्षित होगी, बल्कि पैदल चलने वालों और दोपहिया सवारों को भी सुरक्षा मिलेगी। इसके साथ ही, अक्टूबर, 2027 से ट्रकों में इलेक्ट्रॉनिक स्टेबिलिटी कंट्रोल लगने से घुमावदार, खतरनाक और फिसलन भरे रास्तों पर भारी वाहनों के पलटने की आशंका बेहद कम हो जाएगी, जिससे राष्ट्रीय राजमार्गों पर लगने वाले ट्रैफिक जाम और भयानक ट्रकों की टक्करों में कमी आएगी। भारत सरकार का यह फैसला देश को वैश्विक सड़क सुरक्षा मानकों के समतुल्य खड़ा करता है।

यद्यपि शुरुआत में कार और ट्रक निर्माताओं के लिए इन उन्नत तकनीकों को अपने बेस मॉडलों में एकीकृत करना लागत के दृष्टिकोण से एक चुनौती हो सकता है, लेकिन समय के साथ बड़े पैमाने पर उत्पादन होने से एईबीएस तकनीक काफी सस्ती और सुलभ हो जाएगी। यह नीति न केवल कार खरीदारों में सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाएगी, बल्कि भारत के ऑटोमोबाइल बाजार को अधिक सुरक्षित और तकनीक-संपन्न बनाएगी।

राष्ट्रीय सुरक्षा से समझौता संभव नहीं

ऋषभ मिश्रा



डिजिटल दौर में इंटरनेट केवल मनोरंजन या सूचना का साधन न होकर राष्ट्रीय सुरक्षा, अर्थव्यवस्था और इमरजेंसी सेवाओं के लिए भी प्रमुख हो चुका है। एलन मस्क की कंपनी 'स्टारलिंक' ने उपग्रहों के जरिए इंटरनेट सेवा प्रदान करके डिजिटल क्रांति को अगले मुकाम पर पहुंचा दिया है। अब यह भारत में आने को लालायित है। लेकिन इसे भारत में अपनी सेवाएं शुरू करने के लिए नियामकीय मंजूरियों, सुरक्षा संबंधी शर्तों और स्पेक्ट्रम आवंटन प्रक्रिया से गुजरना होगा। हालांकि इसकी 'एंट्री' से पहले कारोबारी प्रतिस्पर्धा और सुरक्षा के सवाल चर्चा में हैं। 'स्पेसएक्स' की सैटेलाइट इंटरनेट सेवा स्टारलिंक की प्रायोगिक शुरुआत 2020 में हुई थी। खासियत यह कि दूरदराज के इलाकों में भी ब्रॉडबैंड इंटरनेट पहुंचा सकती है, जहां फाइबर केबल बिछाना या टॉवर लगाना मुश्किल है। यह पृथ्वी की निचली कक्षा (एलईओ) में घूम रहे उपग्रह नेटवर्क पर आधारित है।

इसके 11 हजार से अधिक उपग्रह हैं, जिनमें से अधिकांश 550 किमी की ऊंचाई पर परिक्रमा करते हैं। इसके मुकाबले पारंपरिक जियोस्टेशनरी संचार उपग्रह करीब 35,786 किलोमीटर की ऊंचाई पर होते हैं। स्टारलिंक में डेटा आने-जाने में कम समय लग सकता है, जिससे वीडियो कॉल आदि में बेहतर अनुभव मिलता है। दरअसल सैटेलाइट इंटरनेट में उपग्रहों, जमीन पर बने गेटवे और यूजर टर्मिनल की मदद से इंटरनेट कनेक्शन पहुंचाया जाता है। ये उपग्रह रेडियो सिग्नल के जरिए यूजर टर्मिनल से संपर्क करते हैं। स्टारलिंक में ग्राउंड स्टेशन/गेटवे जमीन पर स्थित वे सुविधाएं हैं, जो उपग्रह नेटवर्क को इंटरनेट के अन्य नेटवर्क से जोड़ती हैं। यहां से डेटा फाइबर केबल जैसे स्थलीय नेटवर्क के जरिए आगे पहुंचता है। यूजर की लोकेशन पर स्टारलिंक का यूजर टर्मिनल लगाया जाता है, जिसमें सैटेलाइट एंटीना व वाई-फाई राउटर शामिल होते हैं। एंटीना रेडियो सिग्नल के जरिए उपग्रहों से संपर्क करता है और इलेक्ट्रॉनिक तकनीक की मदद से कनेक्शन बनाए रखता है।

दरअसल मौजूदा टेलीकॉम कंपनियों के लिए यह नई प्रतिस्पर्धा होगी तो वहीं दूरदराज के इलाकों तक इंटरनेट पहुंचाने के लिहाज से इसे बड़े अवसर के रूप में भी देखा जा रहा है। बड़ा सवाल है कि स्टारलिंक के आने से भारत को क्या लाभ होंगे और विदेशी कंपनी के ऑपरेटिंग कंट्रोल व डेटा सुरक्षा चुनौतियों से कैसे निपटा जाएगा। गौरतलब है कि जमीन आधारित कनेक्टिविटी स्थानीय बुनियादी ढांचे पर निर्भर होती है। मोबाइल टॉवर और फाइबर नेटवर्क किसी एक क्षेत्र के विशाल जनसमुदाय को सेवा दे सकते हैं, लेकिन नए क्षेत्रों में सेवाएं देने के लिए वहां बुनियादी ढांचा बनाना पड़ता है। किसी आपदा या युद्ध के दौरान अगर ये ढांचे नष्ट हो जाएं तो संपर्क भी टूट जाते हैं। स्टारलिंक चूंकि सैटेलाइट संचालित इंटरनेट तकनीक है, यही बात इसे आपदा से प्रभावित क्षेत्रों, युद्धग्रस्त इलाकों और दुर्गम पहाड़ियों के लिए उपयुक्त बनाती है। हालांकि भारत में सैटेलाइट इंटरनेट सेवा प्रदाताओं के लिए कड़े नियम लागू हैं। साथ ही भारतीय यूजर्स का डेटा देश में स्थित ग्राउंड गेटवे से होकर गुजरना अनिवार्य है। यद्यपि स्टारलिंक ने इनका पालन करने की इच्छा जताई है। फिर भी तीन बड़ी चुनौतियां आ सकती हैं जिसमें से पहली चुनौती सरकारी आदेश पर अमल कराना है।

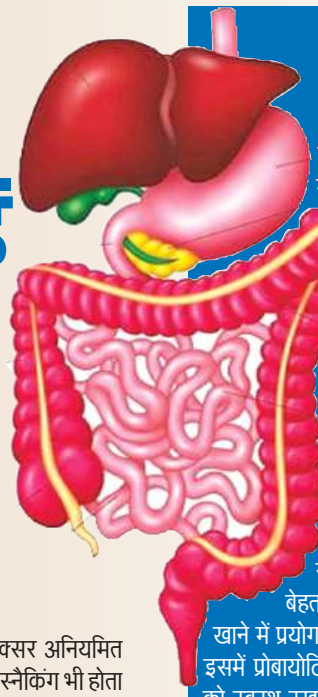
पारंपरिक संचार तंत्रों को सरकार जरूरत पड़ने पर बंद करने का आदेश दे सकती है। स्टारलिंक जैसे सैटेलाइट इंटरनेट में यह प्रक्रिया इतनी सीधी नहीं है। दूसरी चुनौती, कनेक्टिविटी पर नियंत्रण रखना है। स्टारलिंक तकनीकी रूप से दूर बैठे अपने टर्मिनलों को निष्क्रिय कर सकती है अथवा किसी क्षेत्र में सेवा सीमित कर सकती है। ऐसे में संकट के समय यदि सरकार या नागरिकों को इंटरनेट की जरूरत हो, लेकिन कंपनी सेवा बहाल न करना चाहे, तो अधिकारियों के पास इसे दोबारा चालू करवाने का सीधा साधन क्या होगा यह अभी स्पष्ट नहीं। तीसरी चुनौती, डेटा की आवाजाही पर निगरानी रखना है। विदेशी कंपनी के नियंत्रण वाले नेटवर्क में संवेदनशील जानकारियों और डेटा की निगरानी भी चुनौती है। भारत के पास स्टारलिंक और अन्य विदेशी सैटेलाइट इंटरनेट प्रदाताओं का स्वागत करने की अच्छी वजहें हैं। हालांकि इसके लिए तकनीकी अवसरों व राष्ट्रीय सुरक्षा के बीच संतुलन जरूरी है। इस रणनीति के चार प्रमुख पहलू हो सकते हैं।

पहला, शर्तों के साथ व्यापक अनुमति देना है। वस्तुतः स्टारलिंक दूरदराज के इलाकों, आपदा प्रबंधन और समुद्री सेवाओं में उपयोगी साबित हो सकती है, जहां इंटरनेट पहुंचाना मुश्किल है। नियमों और शर्तों के पालन के बाद इसकी व्यावसायिक सेवाओं को व्यापक अनुमति दी जा सकती है। दूसरा, सैटेलाइट इंटरनेट प्रदाताओं के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ानी चाहिए। अलग-अलग देशों की कंपनियों की मौजूदगी से विकल्प बढ़ेंगे और किसी एक विदेशी कंपनी पर निर्भरता कम करने में मदद मिलेगी। तीसरा, भारत को अपने सैटेलाइट नेटवर्क विकसित करने चाहिए। मसलन, जियो ने 1,600 उपग्रहों का समूह स्थापित करने का प्रस्ताव रखा है। सरकार को बाहरी दबाव से मुक्त रखकर घरेलू उपग्रह नेटवर्क के विकास को प्रोत्साहित करना चाहिए। और चौथा, निगरानी क्षमता मजबूत करना है। केवल लाइसेंस की शर्तें तय कर देना विदेशी कंपनियों के ऑपरेशनल कंट्रोल से जुड़े जोखिमों को पूरी तरह खत्म नहीं कर सकता।

भोजन देर रात करने से हो सकती हैं ये दिक्कतें!

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में खाने का समय भी काफी बदल गया है। काम का लंबा शेड्यूल, देर से घर पहुंचना या रात में जागने की आदत के कारण कई लोग रात 9 बजे के बाद खाना खाते हैं। कभी-कभार देर से खाना मजबूरी हो सकता है, लेकिन अगर यह आपकी रोज की आदत बन गई है तो अपनी डाइट और रूटीन पर ध्यान देना जरूरी है। खाने का समय भी हमारी ओवरऑल हेल्थ और पाचन से जुड़ा हो सकता है। खासतौर पर सोने के बिल्कुल करीब खाना खाने से कुछ लोगों को परेशानी महसूस हो सकती है। रात में 9 बजे के बाद खाना खाना अपने आप में हर व्यक्ति के लिए नुकसानदायक नहीं कहा जा सकता। असल में यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि आप किस समय सोते हैं, कितना खाते हैं और खाने में क्या शामिल है। अगर देर से खाना रोज की आदत बन गया है और भोजन सोने के बहुत करीब किया जाता है, तो कुछ लोगों को परेशानी हो सकती है। अगर किसी वजह से रात में देर से डिनर करना पड़ता है, तो बहुत ज्यादा खाने के बजाय संतुलित और हल्का भोजन चुनें। कोशिश करें कि खाना खाने के तुरंत बाद बिस्तर पर न जाएं। देर रात तला-भुना, बहुत मसालेदार और ज्यादा मीठा खाने से भी बचना बेहतर है।

पाचन की समस्या



सोने से ठीक पहले भारी भोजन करने पर कुछ लोगों को पेट फूलना, गैस या भारीपन महसूस हो सकता है। शरीर को भोजन पचाने के लिए समय चाहिए, इसलिए डिनर और सोने के बीच कुछ अंतर रखना उपयोगी हो सकता है। इसके अलावा बहुत अधिक तला-भुना, तीखा या फास्ट फूड खाना। दिनभर में पर्याप्त मात्रा में पानी न पीना। बहुत अधिक मानसिक तनाव लेने से भी पाचन क्रिया धीमी या बहुत तेज हो सकती है। भोजन को चबाकर न खाने से पेट पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है। पाचन सुधारने के लिए सुबह खाली पेट गुनगुने पानी में थोड़ा सा नींबू का रस मिलाकर पीने से पाचन क्रिया बेहतर होती है। इसके अलावा दही या छाछ का खाने में प्रयोग से भी पाचन काफी अच्छी होती है क्योंकि इसमें प्रोबायोटिक्स (अच्छे बैक्टीरिया) होते हैं, जो आंतों को स्वस्थ रखते हैं और भोजन पचाने में मदद करते हैं। खाने के बाद सौंफ और मिश्री चबाने से पेट में गैस नहीं बनती और एसिडिटी से राहत मिलती है।

बढ़ सकता है वजन

देर रात खाने का एक बड़ा कारण अक्सर अनियमित रूटीन और अतिरिक्त स्नैकिंग भी होता है। अगर रात में हाई-कैलोरी फूड या मीठी चीजों का सेवन ज्यादा किया जाए, तो कुल कैलोरी इनटेक बढ़ सकता है और वजन मैनेज करना मुश्किल हो सकता है।

नींद हो सकती है प्रभावित

रात में बहुत ज्यादा या भारी भोजन करने से पेट भरा हुआ और असहज महसूस हो सकता है। इससे सोने में परेशानी हो सकती है या नींद बार-बार टूट सकती है। खासकर बहुत मसालेदार और तला-भुना खाना रात में परेशानी बढ़ा सकता है।

ब्लड शुगर पर असर

देर रात बहुत ज्यादा कैलोरी या मीठा भोजन करना ब्लड शुगर मैनेजमेंट के लिए सही नहीं हो सकता, खासकर उन लोगों के लिए जिन्हें डायबिटीज या ब्लड शुगर से जुड़ी समस्या है। रात का खाना सोने से कम से कम 2 से 3 घंटे पहले खा लें। भोजन के बाद 15-20 मिनट टहलें। खाली पेट चाय, कॉफी या धूम्रपान करने से पेट में एसिड की मात्रा बढ़ती है। वहीं ऐसे लोगों को जिन्हें ज्यादा समस्या हो रही है उन्हें अपने खाने के समय और भोजन की मात्रा को लेकर डॉक्टर या डाइटिशियन की सलाह लेनी चाहिए।

एसिडिटी और सीने में जलन

खाना खाने के तुरंत बाद लेटने से कुछ लोगों में पेट का एसिड ऊपर की ओर आ सकता है, जिससे सीने में जलन, खट्टी डकार या एसिड रिफ्लक्स की समस्या हो सकती है। इसलिए डिनर और सोने के बीच पर्याप्त अंतर रखना बेहतर माना जाता है। इससे बचने के लिए अदरख की चाय पी सकते हैं क्योंकि अदरक में एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं, जो पेट की ऐंठन और गैस को कम करते हैं। अपने आहार में हरी पत्तेदार सब्जियां, फल (जैसे सेब, अनार), और साबुत अनाज शामिल करें।

मनीष कुमार मौर्य

हंसना मना है

पिंकू डॉक्टर के पास गया, बोला: डॉक्टर साहब एक समस्या है। डॉक्टर- क्या परेशानी है? पिंकू: जब मैं किसी से बात करता हूं तो वो इंसान मुझे दिखता नहीं। डॉक्टर- ऐसा कब होता है? पिंकू: फोन पर बात करते वक्त। डॉक्टर: भाग जा यहां से, वरना तू इस धरती पर नहीं दिखेगा।

पिता: पढ़ ले नालायक, कभी तूने अपनी कोई बुक खोलकर भी देखी है। बेटा- हां पापा देखी है, बल्कि रोज देखता हूं उसे। पिता- कौन सी बुक पढ़ने लगा है तू? बेटा- फेसबुक। फिर दे चप्पल दे चप्पल।

पति- सेल्फ कंट्रोल करना तो कोई तुमसे सीखे। पत्नी (खुश होकर)- वह तो है लेकिन किस बात पर? पति- शरीर में इतनी शुगर है लेकिन मजाल है, कभी जुबान पर आने दो, पति की बात सुनकर पत्नी ने अगले चार दिन तक घर में स्ट्राइक कर दी।

सुरेश की बीवी को डिलीवरी के लिए हॉस्पिटल ले गए...सुरेश ने नर्स से बोला- बच्चा होने के बाद लड़का हो तो टमाटर बोलना और लड़की हो तो कहना प्याज हुई है... सुरेश की बीवी को जुड़वा बच्चे हुए, एक लड़का एक लड़की ...नर्स कन्फ्यूजन में बाहर आकर बोली बधाई हो सलाद हुआ है..

कहानी | भूतिया सड़क

सालों पहले मनकपुर गांव के लोगों को व्यापार करने के लिए अक्सर शहर जाना पड़ता था। मनकपुर को शहर से जोड़ने वाली सिर्फ एक ही सड़क थी, जिसके दोनों ओर खूब घना जंगल था। घने जंगल से शहर जाते वक्त गांव वालों को डर भी काफी लगता था, इसलिए कोई भी अकेले शहर की ओर नहीं जाता था। हर किसी को उस डरावनी रोड में होने वाली दुर्घटनाओं से डर लगता था। चाहे दिन का समय हो या रात, वहां बैलगाड़ी से माल ले जा रहे व्यापारी दुर्घटना की चपेट में आ जाते थे। लोगों को रात के समय वहां भूत भी दिखते थे। मालगाड़ियों की अक्सर टक्कर छोटे वाहन से हो जाती थी और दोनों ही मौके पर खत्म हो जाते थे। इन सबके पीछे की वजह गांव वाले भूत को ही मानते थे। बढ़ती दुर्घनाओं के कारण गांव से शहर को जोड़ने वाली सड़क से लोगों ने आना-जाना कम कर दिया, जिसका सीधा असर व्यापार पर पड़ने लगा। अब गांव वालों को दूसरी सड़क बनने का इंतजार था, जो शहर को मनकपुर से जोड़ दे। गांव से कूछ दूरी पर नई सड़क का काम शुरू हो चुका था और देखते-ही-देखते कुछ महीनों में दूसरी सड़क बनकर तैयार हो गई। खुशी के मारे गांव वालों ने उस भूतिया सड़क को बंद करने का फैसला लिया। उस रास्ते पर लोगों ने मिलकर पत्थर व पेड़ गिराकर रास्ता बंद कर दिया और सावधानी के लिए दुर्घटना व भूतों से जुड़ी एक सूचना पट्टी भी लगा दी। अब लोगों ने नई सड़क से आना-जाना शुरू किया। अब वहां किसी तरह की दुर्घटना की आशंका नहीं थी। उधर भूतिया सड़क बंद करने से गांव के लोगों की मौत का सिलसिला थमा और वहां खुशहाली आ गई।

कहानी से सीख : दुख-दर्द और गम हमेशा के लिए नहीं होते हैं। गम के बादल के बाद खुशी का सूरज जरूर खिलता है।

7 अंतर खोजें



जानिए कैसा रहेगा कल का दिन



पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष नए सप्ताह की शुरुआत ऊर्जा और नई चुनौतियों के साथ होगी। व्यापार में गति आएगी, नया मुनाफा संभव है। माता-पिता का सहयोग और मार्गदर्शन मिलेगा।

वृषभ दफ्तर में धैर्य बनाए रखें, कार्यों में प्रगति होगी। व्यापारिक फैसलों में जल्दबाजी न करें। जीवनसाथी के साथ तालमेल बेहतर बना रहेगा। शिव चालीसा का पाठ करें।

मिथुन अधिकारियों से प्रोत्साहन मिलेगा, कार्य सुगम होंगे। नए व्यावसायिक अनुबंध होने की संभावना है। घर में खुशहाली रहेगी, अपनों का साथ मिलेगा।

कर्क कार्यस्थल पर ध्यान और सावधानी से काम निपटाएं। व्यापारिक लेन-देन में स्पष्टता बेहद आवश्यक है। बातचीत में सौम्यता रखें, मनमुटाव न होने दें।

सिंह आपकी कार्यकुशलता और प्रभाव से सभी प्रभावित होंगे। व्यापार में नए रास्ते खुलेंगे, योजनाएं सफल होंगी। दांपत्य जीवन में मधुरता और प्रेम रहेगा।

कन्या सूझबूझ से कठिन काम भी आसानी से हल कर लेंगे। व्यवसाय में नया काम शुरू करने के लिए दिन शुभ है। परिवार के बुजुर्गों का भरपूर आशीर्वाद मिलेगा।

तुला टीम वर्क से काम करने पर बड़ी सफलता मिलेगी। व्यापारिक यात्रा से बड़ा आर्थिक लाभ संभव है। प्रेम संबंधों में सामंजस्य और मधुरता बढ़ेगी। चंद्र देव के मंत्र का जाप करें।

वृश्चिक दफ्तर में जिम्मेदारी बढ़ सकती है, संयम रखें। व्यापार में थोड़ा संघर्ष रहेगा पर परिणाम अच्छे मिलेंगे। अपनों के साथ वक्त बिताने से मन प्रसन्न रहेगा।

धनु नई योजनाओं पर काम शुरू करने के लिए अनुकूल दिन है। व्यापार में आशातीत सफलता और मुनाफा मिलेगा। संतान की ओर से शुभ समाचार मिल सकता है।

मकर प्रभाव बढ़ेगा, तय समय पर लक्ष्य पूरे होंगे। व्यापारिक फैसलों में अनुभव का पूरा लाभ मिलेगा। पारिवारिक वातावरण शांतिपूर्ण और खुशनुमा रहेगा।

कुम्भ नई तकनीक का प्रयोग कार्य में गति और लाभ लाएगा। साझेदारों का पूरा सहयोग मिलेगा, व्यापार बढ़ेगा। मित्रों और प्रियजनों के साथ मेल-जोल बढ़ेगा।

मीन वरिष्ठों का समर्थन मिलेगा, काम की तारीफ होगी। व्यवसाय में नए सौदे बेहद लाभकारी सिद्ध होंगे। परिवार में धार्मिक कार्य की योजना बन सकती है।

सुनील ने दिवाली पर बच्चियों संग बेची फूल-माला



एक्टर और कॉमेडियन सुनील ग्रोवर हमेशा ही अपनी किसी न किसी हरकत से फैंस का दिल जीत लेते हैं। एक बार फिर से दिवाली पर भी कुछ ऐसा ही हुआ और एक्टर ने फिर से अपने चाहने वालों का दिल जीत लिया। सुनील ग्रोवर ने दिवाली पर सड़क किनारे बैठकर फूल वाले दुकानदारों के साथ फूल बेचा। वो फूल-माला बेचने वाली छोटी बच्चियों संग बैठकर मालाएं बेचते हुए दिखे। फोटो पर उनके फैंस ने दिल खोलकर कमेंट्स किए और सबने तारीफ ही की। एक ने लिखा, एक ही दिल कितनी बार दिल जीतोगे भाई। एक ने कहा, क्या चीज हो आप। एक फैन ने कहा, वाह, आप कितने डाउन टू अर्थ हैं। एक ने लिखा- आपका मुकाबला कोई नहीं कर सकता। सुनील ग्रोवर ने फिल्मों और ओटीटी शो में अपने काम से बार-बार साबित किया है कि वे हर तरह के किरदार निभाने में माहिर हैं। हालांकि, जब भी वे द ग्रेट इंडियन कपिल शो के मंच पर आते हैं, तो एक जादू सा बिखेर देते हैं। सलमान खान, आमिर खान, नवजोत सिंह सिद्धू, कपिल देव, गुलज़ार और कादर खान जैसी कई मशहूर हस्तियों की बेहतरीन मिमिक्री करके दर्शकों को प्रभावित करने वाले सुनील ग्रोवर, इस बार पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के रूप में नजर आए। शो के मेकर्स ने हाल ही में आने वाले एपिसोड का एक प्रोमो जारी किया, जिसमें सुनील पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के अंदाज में सरल बिहारी वाजपेयी बनकर सामने आते हैं। जैसे ही वे मंच पर आते हैं, दर्शक, जज नवजोत सिंह सिद्धू और अर्चना पूरन सिंह, वहां मौजूद मेहमान उन्हें हैरानी और तारीफ भरी नजरों से देखते रह जाते हैं।

दिवाली पर बेटों से दूर हैं सेलिना जेटली

छलका दर्द, बोलीं- डर है कहीं मां का प्यार न भूल जाओ



सेलिना जेटली ने सोशल मीडिया पर एक भावुक पोस्ट शेयर कर अपने दिल का दर्द बयां किया है। सेलिना के तीनों बेटे फिलहाल ऑस्ट्रिया में अपने पिता पीटर हाग के साथ रहते हैं। वहीं, अभिनेत्री और उनके पति के बीच तलाक और बच्चों की कस्टडी को लेकर कानूनी लड़ाई चल रही है। सेलिना ने 8 नवंबर को इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट शेयर की। इसमें उन्होंने बताया कि यह लगातार दूसरी दिवाली है, जब वह अपने बच्चों के साथ नहीं हैं। उन्होंने अपने बेटों विंस्टन, विराज और आर्थर को याद करते हुए लिखा कि यह सोचकर उनका दिल टूट जाता है कि उनके मासूम बच्चे इतनी तकलीफ से गुजर रहे हैं और उन्हें किसी एक का पक्ष चुनने जैसा महसूस हो रहा है। सेलिना ने अपनी पोस्ट में लिखा, यह सोचकर मेरा दिल टूट जाता है कि तुम्हारे छोटे और मासूम दिल इतना दर्द झेल रहे हैं। तुम्हें ऐसा महसूस हो रहा है कि तुम्हें किसी एक का पक्ष चुनना है। मुझे सबसे ज्यादा डर इस बात का है कि कहीं तुम्हें बताई जा रही बातों के बीच तुम अपनी मां का प्यार न भूल जाओ। अभिनेत्री ने आगे बताया कि वह अपने कानूनी और आर्थिक फैसले परिवार के भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए ले रही हैं। इस मुश्किल समय के बावजूद उन्होंने अपने पूर्व पति का भी जिक्र किया और कहा कि वह इस बात के लिए उनकी आभारी हैं कि उन्होंने उनके बच्चों को इस दुनिया में आने का मौका दिया। सेलिना ने अपने बेटों को भरोसा दिलाते हुए लिखा, मम्मी ने तुम्हें कभी नहीं छोड़ा है। हम सबने जो जिंदगी साथ बिताई है, मेरा प्यार और हमारा साथ में आने वाला भविष्य, इसे कोई भी कभी नहीं मिटा सकता। मम्मी ने तुमसे कभी किसी एक को चुनने के लिए नहीं कहा। तुम ही मेरी जिंदगी में आगे बढ़ते रहने की वजह हो।

समय रैना ने मेधा संग मनाई दिवाली



स्टैंड-अप कॉमेडियन समय रैना ने मुंबई स्थित अपने नए घर पर रखी दिवाली पार्टी की एक तस्वीर शेयर की है, जिसमें वे 12वीं फेल की एक्ट्रेस मेधा शंकर के साथ नजर आ रहे हैं। इन दोनों के डेट करने की अफवाहों के बीच यह तस्वीर सामने आई है। मेधा गहरे लाल रंग के अनारकली सूट में बहुत प्यारी लग रही थीं, जिस पर सुनहरे रंग का काम था, वहीं समय ने आइवरी रंग का कढ़ाई वाला कुर्ता और सफेद पजामा पहना था। समय ने पहले ही जश्न की कुछ झलकियां शेयर की थीं, जिनसे पता चला कि उन्होंने मुंबई में अपने नए घर पर दिवाली की एक छोटी सी पार्टी रखी थी। उन्होंने लिखा, मुंबई में अपने नए घर पर एक घरेलू दिवाली पार्टी रखी। इसमें मैंने अपने दोस्तों और उनके माता-पिता को भी बुलाया था, बहुत बढ़िया माहौल रहा। इस पार्टी में मनोरंजन जगत और कॉमेडी की दुनिया के कई जाने-माने चेहरे शामिल हुए, जिनमें वरुण धवन, मुनव्वर फारुकी, आशीष चंचलानी, कीकू शारदा, सिद्धांत चतुर्वेदी, वीर पहाड़िया, जाकिर खान, शेरोन वर्मा और बिग बॉस 20 के कंटेस्टेंट स्काउटओपी की गर्लफ्रेंड काशवी हीरानंदानी समेत कई अन्य लोग मौजूद थे। इस पार्टी में मेधा को भी समय की मां, स्वीटी रैना के साथ देखा गया। समय रैना और मेधा शंकर के रिश्ते को लेकर अफवाहें सबसे पहले जून 2026 में शुरू हुईं, जब दोनों को आनंदम के मुंबई प्रीमियर में एक साथ देखा गया। बाद में, मेधा ने समय के शो इंडियाज गॉट लेटेंट के दूसरे सीजन में एक गेस्ट पैनलिस्ट के तौर पर हिस्सा लिया। शो के दौरान, जब समय से पूछा गया कि पैनल में उनका सबसे करीबी दोस्त कौन है, तो उन्होंने मेधा का नाम लिया और उन्हें अपना सबसे अच्छा दोस्त बताया। इसके बाद, रेडिट पर पैनी नजर रखने वाले फैंस ने दावा किया कि दोनों स्विट्ज़रलैंड में एक साथ छुट्टियां मना रहे हैं। इंटरलाकेन में दो लोगों के टहलने की एक तस्वीर वायरल हुई, जिसे लेकर फैंस ने दावा किया कि वे समय और मेधा थे।

शहरों की खराब हवा की स्थिति को और बिगाड़ देते हैं पटाखे : भूमि पेडनेकर

पटाखे फोड़ने वालों पर भड़कीं उर्फी जावेद, बोलीं- सबको जेल में डाल देना चाहिए



दिवाली के जश्न के बाद कई शहरों में हवा की गुणवत्ता काफी खराब हो गई है। इसमें पटाखे फोड़ने की वजह से भी प्रदूषण के स्तर में बढ़ोतरी हुई है। दिल्ली और मुंबई पर भी इसका सबसे बुरा असर पड़ा है। दोनों शहरों में कई इलाकों में हवा की गुणवत्ता गंभीर और खराब श्रेणी में पहुंच गया है। दीवाली के बाद हवा की बिगड़ती गुणवत्ता को लेकर कई लोगों ने चिंता जताई है। इसमें कई सेलेब्स भी शामिल हैं। सोमवार सुबह भूमि पेडनेकर ने दिवाली के बाद बढ़े प्रदूषण पर चिंता जताते हुए इंस्टाग्राम पर लिखा, दीवाली रोशनी, प्यार, परिवार और नई शुरुआत का त्योहार है। लेकिन हर साल, जश्न के साथ-साथ कुछ चीजें भी सामने आती हैं- प्रदूषित हवा, पटाखों का कचरा, शोर और डरे हुए जानवर। पटाखों से बारीक कण और अन्य प्रदूषक तत्व निकलते हैं, जो पहले से ही खराब हवा की स्थिति को और बिगाड़ देते हैं। इसका असर सब पर एक जैसा नहीं होता। बच्चे, बुजुर्ग, सांस की बीमारी वाले लोग और जानवर इससे सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं।

कंटेंट क्रिएटर उर्फी जावेद ने दिवाली के बाद कई शहरों में हवा की गुणवत्ता के बहुत खराब होने पर अपना गुस्सा जाहिर किया है। सोमवार 9 नवंबर को अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर उर्फी ने लिखा, जो लोग पटाखे फोड़ रहे हैं, उन सभी को जेल में डाल देना चाहिए। बस बात खत्म। इन गंवार लोगों ने क्या हालत कर दी है? केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आंकड़ों के मुताबिक सुबह मुंबई के खेरवाड़ी-बांद्रा ईस्ट में एक्यूआई 264 दर्ज किया गया। जो कि खराब स्थित में है।

अभिनेत्री नफीसा अली सोढ़ी ने दिवाली के बाद दिल्ली में बढ़ते प्रदूषण के स्तर पर चिंता जताई है। नफीसा ने पोस्ट में लिखा, वॉक के बाद अपने पार्क में हूं। कल दिवाली थी। दिल्ली में प्रदूषण और एक्यूआई का स्तर बहुत ज्यादा है, इसलिए मैंने मास्क पहना है। लेकिन मुझे व्यायाम जारी रखना है।

अभी तक नहीं मिला रोमांटिक फिल्म का कोई ऑफर : मनोज बाजपेयी

कहा- उन्हें कभी भी रोमांस करने की अपनी क्षमता पर कोई शक नहीं रहा



अभिनेता मनोज बाजपेयी अपनी नई फिल्म लास्ट मैन इन टॉवर को लेकर चर्चा में हैं। इसके प्रमोशन के दौरान अभिनेता ने इस बात पर चर्चा की कि इंडस्ट्री में तीन दशक बिताने के बावजूद, उन्हें रोमांटिक फिल्मों में बहुत कम क्यों देखा गया है। अभिनेता ने बताया कि वह हमेशा से एक जटिल प्रेम कहानी का हिस्सा बनना चाहते थे, लेकिन उन्हें कभी कोई सही ऑफर नहीं मिला। दिलचस्प बात यह है कि मनोज का मानना है कि इंडस्ट्री में अभी भी ऐसे अभिनेताओं को रोमांटिक किरदारों में कास्ट करने को लेकर हिचकिचाहट है, जिनका लुक पारंपरिक नहीं है। उन्होंने कहा, किसी ने मुझसे पूछा, आप रोमांटिक फिल्में क्यों नहीं करते? मैंने कहा, अरे भाई, तीन दशक हो गए हैं! मुझे कभी ऐसा नहीं लगा कि कोई निर्देशक या लेखक मुझे रोमांटिक फिल्म का ऑफर देने में दिलचस्पी रखता हो। अभिनेता ने कहा कि उन्हें कभी भी पर्दे पर रोमांस करने की अपनी क्षमता पर कोई शक नहीं रहा। हालांकि, वह हमेशा से एक आम प्रेम कहानी से कुछ अलग और बेहतर करना चाहते थे। उन्होंने कहा, मुझे पता है कि एक रोमांटिक किरदार कैसे निभाते हैं। मुझे पता है कि रोमांस कैसे किया जाता है। शायद मैं किसी आम रोमांटिक फिल्म से कुछ हटकर तलाश रहा था, क्योंकि मैं ऐसा इंसान नहीं हूं जो आसानी से किसी एक घिसे-पिटे सांचे में फिट हो जाए। मैं हमेशा से एक बहुत ही जटिल प्रेम कहानी की तलाश में था, लेकिन मुझे कभी ऐसा कोई ऑफर नहीं मिला। एक-दो मौके आए भी, लेकिन किसी न किसी वजह से वे फिल्में कभी बन ही नहीं पाईं या शुरू ही नहीं हो सकीं। अपने करियर के इस पड़ाव पर, मनोज को लगता है कि अधेड़ उम्र के लोगों के रोमांस को पर्दे पर दिखाना एक दिलचस्प विषय हो सकता है। उन्होंने आगे कहा, आज के समय में आप केवल अधेड़ उम्र के लोगों की प्रेम कहानी के बारे में ही सोच सकते हैं। ऐसे देश में जहां अलग लुक वाले अभिनेताओं के पास रोमांटिक फिल्म करने का विकल्प तक नहीं है, वहां वह यह कैसे सोच सकते हैं कि कोई अधेड़ उम्र का व्यक्ति इस तरह के दर्शकों के लिए रोमांस कर सकता है? निर्देशक और लेखक उतने ही अच्छे होते हैं जितना कि समाज, है ना? इसलिए, मुझे हमेशा उम्मीद रहती है कि कोई कुछ बहुत ही अनोखा और जटिल लेकर आएगा। जैसे कि अधेड़ उम्र के लोगों की कहानी। जब मनोज से पूछा गया कि क्या दर्शक अब ऐसी कहानियों को ज्यादा स्वीकार कर रहे हैं, तो मनोज ने सहमति जताई और कहा कुछ हद तक। एक तरह से, हम क्रिएटिव लोग भी खुद को सीमित करने के लिए जिम्मेदार हैं, यह सोचकर कि दर्शक अभी तैयार नहीं हैं।

1600 करोड़ पर गरमाई सियासत

पंजाब व हरियाणा में बढ़ी टकराहट

» आप व बीजेपी में वार-पलटवार

» नायब सैनी बोले- केंद्र ने बाढ़ राहत के पैसे दिए थे कहां गए

» आप का पलटवार- सिर्फ गुमराह किया कुछ नहीं दिया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। पंजाब में चुनाव हैं। उसके पास हरियाणा है जहां पर भाजपा सरकार है। पंजाब आप सरकार पर बीजेपी का हमला जारी है। अब चुनाव से पहले हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने पंजाब को पिछले साल केंद्र की ओर से जारी बाढ़ राहत राशि का मुद्दा उठाकर सियासी पारा बढ़ा दिया है। इस मसले पर उन्होंने प्रदेश की आम आदमी पार्टी सरकार को निशाने पर लिया है। उधर, सैनी के बयान पर आप नेताओं ने भी पलटवार करते हुए उन्हें हरियाणा के मुद्दों पर ध्यान देने की सलाह दी है।

हाल ही में हरियाणा सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के तहत लाभार्थियों को डीबीटी के माध्यम से राशि हस्तांतरित करने के कार्यक्रम के दौरान सीएम सैनी ने इस मुद्दे को सियासी हवा दी थी। उन्होंने कहा था कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पिछले साल बाढ़ के दौरान पंजाब के लिए 1600 करोड़ रुपये की सहायता घोषित की थी लेकिन पंजाब सरकार अब भी केंद्र से पैसा नहीं मिलने की बात कह रही है जबकि यह राशि दूसरे कामों में खर्च कर दी गई।



पंजाब के किसानों को मुआवजे का अब भी इंतजार : सैनी

सैनी ने यह भी दावा किया था कि अपने दौरे के दौरान पंजाब के किसानों ने उन्हें बताया कि बहुत से लोग अभी तक मुआवजे का इंतजार कर रहे हैं। उन्होंने भगवंत मान पर चुनाव से पहले किए गए वादे पूरे नहीं करने और बाढ़ प्रभावित किसानों को पर्याप्त मुआवजा नहीं देने का आरोप लगाया।

गुमराह कर रही केंद्र सरकार : चीमा



पंजाब के वित्त मंत्री हरपाल सिंह चीमा ने कहा कि बाढ़ राहत पैकेज के नाम पर केंद्र सरकार ने सिर्फ गुमराह किया है। केंद्र जिन नियमित योजनाओं के आवंटन को राहत राशि बता रहा है, वे बाढ़ नहीं आने की स्थिति में भी राज्य को मिलने थे।चीमा ने कहा कि केंद्र से मिली 240 करोड़ रुपये की राशि नियमित एसडीआरएफ किस्त थी न कि कोई विशेष राहत पैकेज। उन्होंने 1600 करोड़ रुपये की घोषणा को राज्य को हुए नुकसान की तुलना में बेहद अपर्याप्त बताया। चीमा के मुताबिक, पंजाब सरकार ने केंद्र से 20 हजार करोड़ रुपये का पैकेज मांगा था। उन्होंने सीएम सैनी को हरियाणा के मुद्दों पर अधिक ध्यान देने की सलाह दी।

सैनी के बयान तथ्यों से परे : ढांडा

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी अनुराग ढांडा ने कहा कि हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के बयान तथ्यों से परे हैं। वह हरियाणा में विकास मॉडल के नाम पर लोगों को गुमराह कर रहे हैं। उन्हें अपनी सरकार की विफलताएं और घोटाले नहीं दिख रहे हैं। ढांडा ने कहा कि जो सरकार अपने ही राज्य में पीड़ित किसानों और मजदूरों को उनका हक नहीं दिला पाई, उसे दूसरे राज्यों को उपदेश देने का कोई नैतिक आधार नहीं है। उन्होंने आरोप लगाया कि दिल्ली में मौजूदा भाजपा सरकार ने मोहल्ला क्लीनिक की सुविधाएं बंद कर दी हैं। साथ ही, उन्होंने हरियाणा के बढ़ते कर्ज पर भी सीएम सैनी से जवाब मांगा।

हरियाणा देश का सबसे असुरक्षित राज्य : हुड्डा

» पूर्व सीएम बोले- अमित शाह दें जवाब

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क



रोहतक (हरियाणा)। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने कहा है कि करनाल आए केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह को प्रदेश की जनता को कानून व्यवस्था के बारे में भी बताना चाहिए था। स्वयं केंद्र सरकार का सामाजिक प्रगति सूचकांक हरियाणा को देश का सबसे असुरक्षित राज्य बता रहा है। साथ ही केंद्र की ओर से जारी एनसीआरबी के आंकड़े के तहत भी प्रदेश रेप, मर्डर, अपहरण, फिरौती और फायरिंग जैसे मामलों में शीर्ष राज्यों में एक है। हुड्डा ने कहा कि भाजपा के पास 12 साल बाद भी प्रदेश में बताने लायक कुछ नहीं है। इसलिए केंद्र से आए नेता इधर-उधर की बातें करते हैं। पूर्व मुख्यमंत्री बोले, सरकार का विपक्ष के खिलाफ धरना-प्रदर्शन करना हास्यास्पद है। देश के इतिहास में यह पहली बार हो रहा है कि सत्ता पक्ष खुद विपक्ष के खिलाफ सड़कों पर उतर आया है।

यह तो उल्टा चोर कोतवाल को डांटे वाली बात है। इतना ही नहीं अब तक सिर्फ विपक्ष कहता था कि लोकतंत्र खतरे में है, लोकतंत्र को बचाओ, अब तो भाजपा भी कह रही है। यानी लोकतंत्र सचमुच खतरे में है। एक सवाल के जवाब में हुड्डा ने कहा कि कांग्रेस ने अपने कार्यकाल में रिकॉर्ड विकास कार्य करवाए। मेडिकल कॉलेज, विश्वविद्यालय सहित बड़ी परियोजनाएं लेकर आए लेकिन भाजपा के पास कोई उपलब्धि नहीं है। कांग्रेस राज में शुरू हुई योजनाओं के ही फीते काटे जा रहे हैं। अग्निवीर योजना का प्रदेश को हुआ सबसे ज्यादा नुकसान हुड्डा ने कहा कि हर साल पहले साढ़े 5 हजार युवा अकेले प्रदेश से सेना में भर्ती होते थे लेकिन अब संख्या मात्र 950 रह गई है।

कर्नाटक बीजेपी ने कांग्रेस को विज्ञापन को लेकर घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बेंगलुरु। कर्नाटक भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष बी.वाई. विजयेंद्र ने मंगलवार को राज्य की कांग्रेस सरकार की आलोचना की। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार ने पिछले तीन वर्षों में विकास और जन कल्याण की अनदेखी करते हुए विज्ञापनों पर 473 करोड़ रुपये खर्च किए हैं।%एक्स% पर एक पोस्ट में, विजयेंद्र ने दावा किया कि सरकार बढ़ती कीमतों, बेरोजगारी, किसानों की समस्याओं और खराब होते बुनियादी ढांचे जैसे मुद्दों को हल करने के बजाय, प्रचार-प्रसार पर रोजाना 43 लाख रुपये से अधिक खर्च कर रही है। उन्होंने कहा कि विकास शून्य, प्रचार में हीरो! प्रचार पर 473 करोड़ रुपये खर्च किए गए। लेकिन विकास कहां है? विजयेंद्र ने कांग्रेस सरकार पर आरोप लगाया कि उसने सड़क निर्माण, रोजगार सृजन या किसानों की मदद में निवेश करने के बजाय, अपनी छवि चमकाने के लिए फंड का इस्तेमाल किया।



उन्होंने कहा कि कर्नाटक की कांग्रेस सरकार ने कथित तौर पर सिर्फ तीन सालों में विज्ञापनों पर 473 करोड़ रुपये जैसी बड़ी रकम उड़ा दी है। यह हर दिन 43 लाख रुपये से भी ज्यादा है - सड़कें बनाने, नौकरियां पैदा करने या किसानों की मदद करने के लिए नहीं, बल्कि अपनी छवि चमकाने के लिए! बीजेपी नेता ने सरकार की नाकामियों को उजागर किया, जिनमें दूध की बढ़ती कीमतें, बस के बढ़े हुए किराए, और बिजली व जरूरी सेवाओं की बढ़ती लागत शामिल हैं। उन्होंने किसानों की समस्याओं, युवाओं की बेरोजगारी और ठेकेदारों के लंबित भुगतानों की ओर भी इशारा किया।

सिद्धारमैया के साथ राजनीतिक मतभेद नहीं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बेंगलुरु। कर्नाटक के मुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार ने 10 नवंबर को लोक भवन में राज्यपाल सुधा यादव से मुलाकात की और उन्हें दीपावली की शुभकामनाएं दीं। ट्विटर पर पोस्ट करते हुए, शिवकुमार ने इस मुलाकात को सुखद बताया और राज्यपाल के स्नेहपूर्ण व्यवहार और आतिथ्य के लिए उनका आभार व्यक्त किया। 9 नवंबर को, शिवकुमार ने पूर्व मुख्यमंत्री सिद्धारमैया के साथ राजनीतिक मतभेद की अफवाहों का खंडन किया। उन्होंने आगे कहा, राजनीति में आलोचक और विरोधी होने चाहिए। जब वे होते हैं, तभी हम जैसे लोग साफ-सुथरी राजनीति कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि कुछ लोग जानबूझकर ऐसा माहौल बनाने की कोशिश कर रहे हैं, जिससे लगे कि दोनों नेताओं के बीच कोई अनबन है।

मेखरी सर्कल और टाउन हॉल के पास मीडिया से बात करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया, पूर्व मुख्यमंत्री सिद्धारमैया और मेरे बीच कोई बड़ा या छोटा मतभेद नहीं है। कुछ लोग ऐसा माहौल बनाने की कोशिश कर रहे हैं जैसे हमारे बीच कोई दरार हो। सिद्धारमैया हमारे नेता हैं। कुछ लोग, जिनमें महास्वामीजी भी शामिल हैं, मीडिया में इस बात को अलग तरह से पेश कर रहे हैं। इन मामलों को लेकर जो कुछ भी हमें कहना था, वह हम पहले ही उनसे कह चुके हैं। शिवकुमार ने बताया कि सिद्दारमैया के साथ उनकी हालिया मुलाकात स्थानीय निकाय चुनावों के करीब आने की वजह से हुई थी। उन्होंने कहा, मुझे उनके साथ कई मुद्दों पर चर्चा करनी थी, इसलिए मैं उनसे मिला और त्योहार की शुभकामनाएं दीं। इसके अलावा, शिवकुमार ने 2008 से पहले सरकार द्वारा अधिग्रहित जमीन पर बनी संपत्तियों को नियमित करने के लिए, धारा 38क के तहत लगने वाले शुल्क में 50 प्रतिशत की कटौती की घोषणा की। उन्होंने कहा कि इस कदम से लगभग 100,000 संपत्ति मालिकों को राहत मिलेगी और वे अपने स्वामित्व के दस्तावेज हासिल कर सकेंगे। दीवाली के दौरान मीडिया से बात करते हुए, शिवकुमार ने बताया कि सरकार ने मौजूदा दिशानिर्देशों में बदलाव किया है।



» सीएम बोले- राजनीति में आलोचक और विरोधी होने चाहिए

नोटबंदी के 10 साल पूरे होने पर भाजपा ने जश्न क्यों नहीं मनाया

» शिवसेना यूबीटी नेता ने मोदी सरकार से पूछा सवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। शिवसेना (यूबीटी) नेता आदित्य ठाकरे ने नोटबंदी के 10 साल पूरे होने पर केंद्र की भाजपा सरकार से इसके नतीजों पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने पूछा कि नोटबंदी के एक दशक बाद सरकार ने इसकी उपलब्धियों का जश्न क्यों नहीं मनाया और क्या देश को इसके घोषित लक्ष्यों के मुताबिक कोई फायदा हुआ?

आदित्य ने कहा कि नोटबंदी के 10 साल पूरे होने पर न तो होर्डिंग दिखे और न ही अखबारों में कोई विज्ञापन नजर आया। उन्होंने सवाल किया कि क्या सरकार के पास इस फैसले की कोई उपलब्धि नहीं है? गौरतलब है कि नरेंद्र मोदी ने 8 नवंबर 2016 को देश के नाम संबोधन में 500 और 1000 रुपये के पुराने नोट बंद करने की घोषणा की थी।

सूर्यकुमार को मिली मुंबई की कमान

» सैयद मुश्ताक अली टी20 ट्रॉफी के लिए 16 सदस्यीय टीम का एलान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। टी20 विश्व कप विजेता भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव को आगामी सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी के लिए मुंबई टीम की कमान सौंपी गई है। मुंबई क्रिकेट एसोसिएशन (एमसीए) ने सोमवार को 16 सदस्यीय टीम का एलान किया। सूर्यकुमार अपनी अंतरराष्ट्रीय अनुभव, नेतृत्व क्षमता और आक्रामक बल्लेबाजी के दम पर टीम को खिताब दिलाने की कोशिश करेंगे। मुंबई क्रिकेट एसोसिएशन ने सूर्यकुमार को कप्तान नियुक्त करने की जानकारी देते हुए कहा कि उनके अनुभव और नेतृत्व से टीम को मजबूती मिलेगी।

सूर्यकुमार को रणजी ट्रॉफी अभियान के पहले चरण के लिए टीम में शामिल नहीं किया गया था। हालांकि, सीमित ओवरों के क्रिकेट में उनके शानदार रिकॉर्ड और इस साल भारत को लगातार दूसरी बार टी20 विश्व कप का खिताब दिलाने के बाद उन्हें यह जिम्मेदारी सौंपी गई है। कप्तानी मिलने पर सूर्यकुमार यादव ने खुशी जाहिर की। उन्होंने कहा, मुंबई का प्रतिनिधित्व करना हमेशा गर्व की बात होती है। सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में इस प्रतिभाशाली टीम की कप्तानी करना मेरे लिए सम्मान की बात है।



उन्होंने आगे कहा कि टीम में अनुभवी खिलाड़ियों के साथ युवा प्रतिभाओं का अच्छा मिश्रण है। उन्हें भरोसा है कि सभी खिलाड़ी एकजुट होकर पूरे जोश के साथ खेलेंगे। टीम का लक्ष्य ट्रॉफी जीतकर मुंबई वापस लाना है। सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में मुंबई को कुछ अहम खिलाड़ियों के बिना मैदान पर उतरना होगा। ऑलराउंडर तनुष कोटियान और सूर्यांश शेडगे को भारत ए टीम में जगह मिली है। दोनों खिलाड़ी दोहा में 19 से 29 नवंबर तक होने वाले राइजिंग स्टार्स एशिया कप में हिस्सा लेंगे। वहीं, श्रेयस अय्यर न्यूजीलैंड के खिलाफ वनडे सीरीज में भारतीय टीम के साथ हैं, जबकि रणजी ट्रॉफी में मुंबई की कप्तानी करने वाले सिद्धेश लाड भी इस प्रतियोगिता में नहीं खेलेंगे।

महिला टी20 सुपर लीग में स्मृति मंधाना महाराष्ट्र की बनीं कप्तान

नई दिल्ली। स्मृति मंधाना सीनियर विमेंस टी20 ट्रॉफी के सुपर लीग चरण में मौजूदा चैंपियन महाराष्ट्र की कप्तानी करती नजर आएंगी। 16 सदस्यीय महाराष्ट्र टीम की घोषणा कर दी गई है, जिसमें तेजल हसबनीस को उपकप्तान की जिम्मेदारी सौंपी गई है। स्मृति मंधाना घरेलू मैदान पर पिछले महीने जिम्बाब्वे के खिलाफ खेली गई वाइट-बॉल सीरीज में भारतीय टीम की कप्तानी के कारण टूर्नामेंट के लीग चरण में उपलब्ध नहीं थीं। सीरीज समाप्त होने के बाद ब्रेक लेकर अब वह अपनी राज्य टीम में लौट आई हैं। उनकी वापसी से महाराष्ट्र की खिताब बचाने की उम्मीदों को मजबूती मिली है। टीम ने पिछले सीजन में यह ट्रॉफी अपने नाम की थी। महाराष्ट्र की 16 सदस्यीय टीम में कई अनुभवी खिलाड़ी शामिल हैं। देविका वैद्य, अनुजा पाटिल, मुक्ता मगरे और गौतमी नाइक जैसे खिलाड़ी टीम को मजबूती देंगे। वहीं, शिवाली शिंदे और दामिनी बांकर विकेटकीपर की भूमिका निभाएंगी।

रामायण : अग्रिम बुकिंग में गिरावट अग्निपरीक्षा अभी बाकी

» छठे दिन के लिए अग्रिम टिकट बिक्री का सकल मूल्य करीब 44.88 करोड़ रहा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। मैकनिल्क के उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार 10 नवंबर को छठे दिन के लिए अग्रिम टिकट बिक्री का सकल मूल्य करीब 44.88 करोड़ रुपये था। सातवें दिन के लिए उपलब्ध अग्रिम बुकिंग लगभग 23.11 करोड़ रुपये तक दिखाई गई। आठवें दिन के लिए यह आंकड़ा करीब 12 करोड़ रुपये था। यहां शुरुआती दिनों के मुकाबले अग्रिम बुकिंग में कमी के संकेत दिखाई देते हैं।

केआरके को नोटिस आलोचना का



जवाब कानूनी कार्रवाई से?

विवाद की शुरुआत उस समय और तेज हुई जब फिल्म से जुड़ी कंपनी गॉडपावर मीडिया प्राइवेट लिमिटेड की ओर से मुंबई की लॉ फर्म आनंद एंड नाइक ने कमाल आर. खान को मानहानि का कानूनी नोटिस भेजा। मीडिया रिपार्ट के मुताबिक नोटिस में आरोप लगाया गया कि केआरके ने एक्स, यूट्यूब और दूसरे सोशल मीडिया मंचों पर फिल्म तथा कंपनी के खिलाफ झूठे और दुर्भावनापूर्ण आरोप लगाए, जिनसे उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचा। केआरके ने नोटिस की तस्वीर सार्वजनिक करते हुए पलटवार किया। उनका कहना था कि दो हजार करोड़ रुपये की फिल्म बनाने वाला निर्माता एक फिल्म समीक्षक की आलोचना भी सहन नहीं कर पा रहा। उन्होंने फिल्म को लेकर अपनी नकारात्मक राय दोहराई और उन समीक्षकों पर भी सवाल उठाए जो फिल्म की तारीफ कर रहे हैं।

कानूनी नोटिस भेजना अपने आप में सवाल

किसी फिल्म को खराब बताना उसके अभिनय, पटकथा, संगीत या दृश्य प्रभावों की आलोचना करना समीक्षा का हिस्सा है और मानहानि का नोटिस भेजना अपने आप में किसी आरोप के सही या गलत होने का प्रमाण नहीं है। उसका फैसला कानून और उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर होगा। लेकिन सिर्फ एक फिल्मी समीक्षक की समीक्षा पर कानूनी नोटिस भेजना अपने आप में सवाल उठा रहा है।

मोदी ने कभी मुझसे नजरें नहीं मिलाईं : सोनिया गांधी

» कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष बोलीं-वंचित पृष्ठभूमि से आने के बावजूद, पीएम मोदी ने आरएसएस के भीतर अपनी मेहनत से सत्ता तक का सफर तय किया

» कहा, मैं पार्टी चलाती थी और मनमोहन सिंह सरकार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी ने अपने नए संस्मरण, बिलॉन्गिंग, अ जर्नी ऑफ लव में अपने निजी और राजनीतिक सफर की झलक पेश की है। इसमें उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ अपने संबंधों और पिछले कुछ वर्षों में उनके बीच हुई सीमित बातचीत का भी जिक्र किया है। सोनिया गांधी लिखती हैं कि आधिकारिक कार्यक्रमों में हुई संक्षिप्त बातचीत के अलावा, उनके और प्रधानमंत्री मोदी के बीच वास्तव में कोई खास संपर्क नहीं रहा है। उन्होंने आगे कहा कि दोनों की वैचारिक पृष्ठभूमि अलग-अलग है और भारत को लेकर दोनों का दृष्टिकोण भी बिल्कुल अलग है। उन्होंने कहा मोदी कभी नजरे नहीं मिलाते हैं।

वहीं सोनिया गांधी ने अपनी किताब में यूपीए सरकार को चलाने को लेकर खुलासा



किया है. उन्होंने बताया है कि वो और पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह कैसे पार्टी और सरकार को संभालते थे। हार्परकॉलिन्स इंडिया द्वारा प्रकाशित यह संस्मरण मंगलवार को बाजार में आ गया। गांधी ने प्रधानमंत्री मोदी के साथ हुई कुछ संक्षिप्त बातचीत को भी याद किया है, जिसमें वे मौके भी शामिल हैं जब अस्पताल से लौटने के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने उनका हाल-चाल पूछा था। गांधी यह भी मानती हैं कि एक वंचित पृष्ठभूमि से आने के बावजूद, पीएम मोदी ने आएसएस के भीतर अपनी मेहनत से सत्ता तक का सफर तय किया। वह बताती हैं कि राजनीति में उनका (मोदी का) सफर उनके (गांधी के) सफर से बिल्कुल अलग रहा है, जो उनके अलग-अलग निजी अनुभवों और राजनीतिक पृष्ठभूमियों को दर्शाता है। गांधी अपने संस्मरण में लिखती हैं कि पीएम मोदी ने निश्चित रूप से एक वंचित पृष्ठभूमि से निकलकर RSS के भीतर सत्ता तक का रास्ता बनाया।

सोनिया गांधी ने पीएम मोदी के साथ हुई अपनी संक्षिप्त मुलाकातों को याद किया है। अपने संस्मरण में, गांधी लिखती हैं कि 12 साल से अधिक समय तक प्रधानमंत्री रहने के बावजूद, मोदी के साथ उनकी बातचीत मुख्य रूप से औपचारिक ही रही है। वह बताती हैं कि वे कभी-कभार कुछ अर्ध-आधिकारिक मौकों पर मिलते हैं, जैसे कि संसद सत्र के समापन पर स्पीकर के कक्ष में होने वाली बैठकें, जहाँ पारंपरिक रूप से प्रमुख राजनीतिक दलों के नेता इकट्ठा होते हैं।

राजीव की हत्या से पहले राहुल ने जताई थी अनहोनी की आशंका

पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या से करीब दो महीने पहले राहुल गांधी ने अपने पिता की सुरक्षा को लेकर मां सोनिया गांधी के सामने एक ऐसी आशंका जताई थी, जो बाद में सच साबित हुई। राहुल ने कहा था कि अगर उनके पिता की सुरक्षा के लिए कुछ नहीं किया गया तो उन्हें जल्द ही उनके अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए लौटना पड़ सकता है। सोनिया गांधी ने अपने संस्मरण बिलॉन्गिंग अ जर्नी ऑफ लव में इस घटना के साथ राजीव गांधी की हत्या और परिवार पर टूटे दुख के पलों को याद किया है।सोनिया गांधी के मुताबिक, राजीव गांधी के साथ एक दौरे पर गए राहुल ने हत्या से करीब दो महीने पहले उनसे कहा था, अगर पापा की सुरक्षा को लेकर कुछ नहीं किया गया तो मुझे पता है कि जल्द ही मुझे उनके अंतिम संस्कार के लिए वापस आना पड़ेगा।

एनसीपी के दोनों गुटों में विलय पर कोई बात नहीं : रोहित पवार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। एनसीपी एसपी विधायक रोहित पवार ने पार्टी के दोनों गुटों के विलय की अटकलों को पूरी तरह खारिज किया है। शरद पवार से मुलाकात के बाद उन्होंने कहा कि पार्टी में विलय या एनडीए के साथ गठबंधन पर कोई चर्चा नहीं हुई है। रोहित ने आरोप लगाया कि राजनीतिक नैरेटिव गढ़ने के लिए यह अफवाह फैलाई जा रही है। अपने दादा (चाचा) और एनसीपी एसपी प्रिमुख शरद पवार से उनके आवास पर मुलाकात करने के बाद पत्रकारों से बात करते हुए, रोहित ने कहा कि न तो शरद पवार और न ही पार्टी की कार्यकारी अध्यक्ष सुप्रिया सुले ने एनडीए के साथ विलय या किसी तरह के गठबंधन पर कोई चर्चा की है।



» बोले एनसीपी एसपी विधायक-राजनीतिक नैरेटिव गढ़ने के लिए यह अफवाह फैलाई जा रही

उन्होंने कहा कि अगर विलय को लेकर कोई बातचीत चल रही होती, तो सुप्रिया ताई या पवार साहब ने मुझसे जरूर बात की होती। हमारी पार्टी में विलय को लेकर कोई चर्चा नहीं हुई है। ऐसी चर्चा सिर्फ अजित दादा की पार्टी और मीडिया में हो रही है। पिछले हफ्ते, अजित पवार के नेतृत्व वाली ह्यष्टक्क के कई नेताओं – जिनमें प्रफुल्ल पटेल और पार्थ पवार शामिल थे – ने शरद पवार से मुलाकात की थी। शरद पवार हाल ही में सीने में संक्रमण (चेस्ट इन्फेक्शन) के कारण अस्पताल में भर्ती थे। इस मुलाकात के बाद विलय की अटकलें और तेज हो गईं। इसके अलावा, शरद पवार और प्रफुल्ल पटेल का एक वीडियो भी वायरल हुआ, जिसमें वे 10 नवंबर के बाद एक संभावित बैठक के बारे में चर्चा करते नजर आ रहे हैं, जिससे इन चर्चाओं को और हवा मिल गई। इन अटकलों के बीच, एनसीपी के प्रदेश अध्यक्ष सुनील तटकरे ने दावा किया कि अगर अजीत पवार जीवित होते, तो इस साल फरवरी में ही दोनों गुटों का विलय हो गया होता। रोहित पवार ने आरोप लगाया कि ये खबरें एक खास राजनीतिक नैरेटिव (विमर्श) बनाने की कोशिश का हिस्सा हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि वह महाराष्ट्र में भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार के सबसे मुखर आलोचकों में से एक बने हुए हैं।

अनिवार्य सेवानिवृत्ति आचरण पर लांछन नहीं लगाता : सुप्रीम कोर्ट

» सुप्रीम कोर्ट ने दो क्लर्कों के रिटायरमेंट के आदेश को रखा बरकरार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने खराब सर्विस के आधार पर दो सरकारी क्लर्कों के कंपलसरी रिटायरमेंट को बरकरार रखते हुए कहा कि अनिवार्य सेवानिवृत्ति की शक्ति का दायरा बहुत व्यापक है। लेकिन इसकी मुख्य शर्त है कि संबंधित अधिकारी पूरी ईमानदारी निभाते हुए ठोस तथ्यों के आधार पर अपना फैसला लें।

अदालत ने कहा कि कंपलसरी रिटायरमेंट के आदेश को चुनौती देने के लिए ये तर्क नहीं दिया जा सकता है कि सब के साथ समानता का व्यवहार नहीं किया गया। जस्टिस मनमोहन और जस्टिस श्री चंद्रशेखर की बेंच ने यह टिप्पणी छत्तीसगढ़ विधि माप विभाग के दो कर्मचारियों की तरफ से दायर अपीलों को खारिज कर दिया। दोनों को साल 2017 में अनिवार्य रूप से सेवानिवृत्त कर दिया गया था। अपीलकर्ता चतुर सिंह ध्रुव और मनहरण लाल साहू को 1989 और 1993 में रायपुर के लीगल मेट्रोलॉजी विभाग में चपरासी के पद पर नियुक्त किया गया था।

उत्तर प्रदेश सरकार से सुप्रीम कोर्ट ने मांगा जवाब

» जमानत मिलने पर भी डेढ़ महीने जेल में रहा आरोपी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। यूपी के कारनामें सुर्खियां न बने ऐसा हो ही नहीं सकता। नये मामले में उत्तर प्रदेश में आत्महत्या के लिए उकसाने के एक मामले के आरोपी को सुप्रीम कोर्ट से जमानत मिल गई थी। कोर्ट ने आरोपी को जेल में करीब एक साल बिताने के बाद जमानत दी थी, लेकिन इसके बावजूद वो और डेढ़ महीने तक जेल में ही रहा। आरोपी के साथ ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि वकीलों ने ट्रायल कोर्ट में उसका पक्ष रखने से इनकार कर दिया था।



सुप्रीम कोर्ट ने उसे रिहा करने का निर्देश दिया और आरोपी को अवैध रूप से हिरासत में रखने के लिए उसे दिए जाने वाले मुआवजे पर उत्तर प्रदेश सरकार से जवाब मांगा। न्यायमूर्ति जे.बी. पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनमोहन की पीठ ने इस मामले को बहुत ही असामान्य और बेहद परेशान करने वाला बताया, क्योंकि सुप्रीम कोर्ट का आदेश लागू नहीं हो पाया और आरोपी डेढ़ महीने तक अवैध रूप से हिरासत में रहा।

पीठ ने जेल अधीक्षक को निर्देश दिया कि वे आरोपी से 10,000 रुपये का पर्सनल बॉन्ड लेकर उसे तुरंत रिहा करें। अदालत ने जेल प्रशासन को आरोपी को रिहा करने का निर्देश देने के साथ-साथ, उसे अवैध रूप से हिरासत में रखने के लिए दिए जाने वाले मुआवजे पर यूपी सरकार से जवाब मांगा। साथ ही, अदालत ने यह भी निर्देश दिया कि इस मामले को इलाहाबाद हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश के संज्ञान में लाया जाए। पीठ ने कहा, राज्य सरकार को यह बताना होगा कि याचिकाकर्ता को अब तक अवैध रूप से हिरासत में रखने के लिए उसे उचित मुआवजा क्यों न दिया जाए, जबकि इस अदालत ने डेढ़ महीने पहले ही उसे जमानत पर रिहा करने का आदेश दे दिया था।

आरोपी ने आरोप लगाया कि स्थानीय बार एसोसिएशन सुप्रीम कोर्ट के आदेश को लागू होने से रोक रहा है और किसी भी वकील को उसका पक्ष रखने नहीं दे रहा है। इसके बाद, आरोपी ने फिर से सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया और हस्तक्षेप की मांग की। याचिकाकर्ता ने आत्महत्या के मामले में मुकदमे को राज्य से बाहर स्थानांतरित करने की अपील करते हुए कहा, अदालत परिसर के भीतर जानबूझकर एक शत्रुतापूर्ण और खौफनाक माहौल बनाना, ताकि जमानत बॉन्ड दाखिल न किए जा सके, सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिए गए नियमित जमानत आदेश को निष्प्रभावी बनाने और उसे पलटने के समान है।

महाराष्ट्र कार्यालय :- 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क, 2-डी सिटी मॉल, अंधेरी वेस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र - 400053। विधि सलाहकार : मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष : 0522- 4078371 | Email : daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा